।। ओ३म् ।।

प्रभु से विनय

हे विष्णु! आप मधु हैं! आपका बनाया हुआ संसार भी मधु है। रहे हम प्राणी, जो जीव भाव बने बैठे हैं, हमारे हृदयों में नाना त्रुटियाँ हैं, नाना चिन्ताएँ हैं। हे विधाता! आप तो विष्णु हैं, शेषनाग पर शयन करने वाले हैं। हे भगवन्! हमारा वह कौन सा काल आयेगा जब हम भी शेषनाग की शैय्या पर शयन करने वाले बनेंगे। हम मानव तो अवश्य हैं परन्तु इतने अभागे नहीं हैं, यदि अभागे होते तो आपके नियम के अनुकूल हमें यह मानव योनि ही प्राप्त न होती।

भगवन्! हमारा हृदय तो चाहता है कि हम शान्तिदायक बन जायें, शेषनाग पर स्थित हो जायें, इससे भी ऊँचा स्थान हो जाये, परन्तु क्या करें, यह स्थिति तो उसी काल में आयेगी जब विधाता! आपके बनाये हुए सर्वज्ञ पदार्थ, ये पञ्च भौतिक तन्मात्राएँ हमारे शरीर में शान्तिदायक बन करके कार्य करेंगी, परन्तु क्या करें इतने महान् दुर्भागी बने बैठे हैं। विधाता! इसमें आपका तो कोई दोष नहीं, हमारे कर्मों का ही दोष है जो आपके आँगन में नहीं आ रहे हैं। अभागे इसलिए हैं कि आपके नियन्त्रण में कार्य नहीं करते। हे विधाता! जब तक आपकी करूणा न होगी, दया न होगी तब तक हम कदापि भी आपके आँगन में न आ सकेंगे! हे विधाता! हमारे हृदय में शान्ति उत्पन्न करो, आज हम नास्तिक बनते जा रहे हैं, हे विधाता! हमें नास्तिक से आस्तिक बनाओ।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अँक : 518	कुल पृष्ठ संख्या	समग्र अँक : 593
वर्ष : 44	44	समग्र वर्ष : 50

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय		पृष्ठ संख्या
1.	प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2.	अनुक्रम		4
3.	मोक्ष	पूज्यपाद-गुरुदेव	5-18
4.	मृत्यु और जीवन	पूज्यपाद-गुरुदेव	19-35
5.	ऋषियों के उद्गार		36
6.	दान, पुस्तकों की सूची, प्राप्ति के स्थान व सूचना आदि		37-42

अथर्ववेद ब्रह्म पारायण याग

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से पूज्यपाद-गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की सद्प्रेरणा एवम् आशीर्वाद से वैदिक अनुसन्धान समिति द्वारा प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी अथर्ववेद ब्रह्म पारायण याग का आयोजन आर्य समाज मालवीय नगर नई दिल्ली के प्रांगण में दिनाँक 11 दिसम्बर, 2015 से 13 दिसम्बर, 2015 तक बड़े हर्ष एवम् उल्लास के साथ आयोजित किया जा रहा है जिसमें आप सभी अपने सम्बन्धियों, मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

सभी को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ

।। ओ म् ।।

मोक्ष

जीते रहो !

देखो मुनिवरो ! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद-मन्त्रों का गुण-गान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा कि आज हमने पूर्व से जिन वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परा से ही उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्रा वेद वाणी में उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान का प्रायः वर्णन किया जाता है। क्योंकि वह परमपिता परमात्मा ज्ञान और विज्ञान में सदैव प्रतिष्ठित रहता है। जब मानव विज्ञान के युग में प्रवे ा करता है तो वह उस प्रभु की कला औति का विचार-विनिमय प्रारम्भ करने लगता है। वैदिक साहित्य में परमपिता परमात्मा को **वि वकर्मा** कहा है। उसकी रचना मानव को द ष्टिपात आने लगती है। क्योंकि मानव के अन्तःकरण में ही नाना सँस्कार विराजमान हैं और उसी आधार पर यह मानव नाना रूपों में द ष्टिपात करता है। उस परमपिता परमात्मा को वैदिक साहित्य में कहीं **वसुन्धरा** कहा है क्योंकि मानव इसी में व ाभूत रहता है। नाना प्रकार की आभा को प्राप्त करता हुआ, उसी के अन्तर्गत उसके गर्भ में परणित होता रहता है। क्योंकि यदि उसकी मूल चेतना समाप्त हो जाए तो मानव, मानव नहीं रहेगा, यह सँसार, सँसार नहीं रह पाता। ऐसा अनुपम जगत है कि उस अनुपम जगत के लिये मानव अपने जीवन को बहुत ऊर्ध्व में ले जाना चाहता है। वह ऊ र्वत्व को प्राप्त नहीं हो पाता। परन्तु जब हम गम्भीरता से विचार-विनिमय प्रारम्भ करते हैं तो वह देव भी वसुन्धरा बन करके इस सँसार को धारण कर रहा है।

हे प्रभु ! तू कैसा वि वकर्मा है? आपकी कैसी अनुपमता है? मानव जब तेरे विषय में विचारने लगता है तो मौन हो जाता है, दा ानिक मुग्ध ा हो जाता है, वैज्ञानिक परमाणुओं में ओत-प्रोत हो करके वह मौन हो जाता है। हे देव! तू कैसा विचित्रा है, तेरी कैसी विचित्रा रचना है जो मानव

जान नहीं पाता। जब मानव तेरे व ाभूत, तेरी महती में परणित हो जाता है वह सँसार को आभा में इसको उच्चारण करने में असमर्थ हो जाता है। मेरे प्यारे ! राज ऋषियों ने नाना प्रकार की वार्ताएँ प्रकट की हैं, नाना प्रकार का अनुसं ाान किया।

आज मैं तुम्हें नाना ऋषियों की विज्ञान ाला में अथवा नाना दा ानिकों में तुम्हें ले जाना चाहूँगा। जहाँ मानव नाना प्रकार का विचार-विनिमय करता रहा है। नाना प्रकार की अनुसंधान ालाएँ, नाना प्रकार की विज्ञान ालाएँ, ालाओं में रमण करने वाला प्राणी अपने को ऊर्ध्व में ले जाना चाहता है। परन्तु हमने इससे पूर्व काल में प्रकट करते हुए कहा कि यह जो परमात्मा का अनुपम क्षेत्रा है इसमें नाना प्रकार की उड़ान उड़ी जाती है। नाना प्रकार के उड़ान उड़ने वाले हुए हैं जिनकी उड़ान बहुत ही विचित्रा रही है। मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जिस काल में महर्षि भ गु जी साम-गान गाते रहते थे। ऋग् का साम से मिलान करते रहते थे। ऋग् का साम से मिलाप होता है तो मानव के जीवन की सन्धि ापात हो जाती है। जैसे रात्रि और दिवस दोनों के मिलान का नाम सन्धि ा कहा जाता है। जिस प्रकार वही सन्धि जब साम-गान गाता है, सामवेद का मिलान कर लेता है जैसे मानव वेद के मन्त्रा का उच्चारण करता है, इस वेद का ज्ञाता है।

ओ३म् रूपी सूत्रा

ओम् प्रथम आता है। यह जो ओ३म् है यह कैसा अनुपम है? जैसे माला में ागा होता है अथवा सूत्रा होता है इस सूत्रा में प्रत्येक मनका पिरोया हुआ है, मनके पिरोने के प चात् यह माला बन जाती है। इसी प्रकार प्रत्येक वेद की ऋचा उस ओम् रूपी धागे में पिरोई हुई है। यदि हम ओम् रूपी धागे को वेद की ऋचा में से प्रथक कर देते हैं तो उसका जो विज्ञान है वह एक सूत्रा में नहीं रह सकता। मुनिवरो ! विज्ञान को भी सूत्रा में लाना है और विज्ञान का सूत्रा क्या है? मैंने बहुत पुरातन काल में वाक्य प्रकट करते हुए कहा था कि यह जो 'ओम् ' रूपी धागा है, सूत्रा है इसमें प्रत्येक वेद की ऋचा पिरोई हुई है।

वेद-मन्त्रा के दो अर्थ

एक वेद का मन्त्रा है उसका दो प्रकार का अर्थ माना जाता हैएक को हमारे यहाँ रूढ़ि कहते हैं और द्वितीय को यौगिक कहते हैं। रूढ़ि उसे कहते हैं जिसमें मानवीय साधारण पद्धति होता है। मानव का विचार, मानव का रहन-सहन, मानव की प्रतिभा उसको रूढ़ि कहते हैं। वेद से उसका सम्बन्ध रहता है। परन्तु यौगिक उसे कहा जाता है जहाँ प्राणत्व की क्रिया क्या है? मनस्ताव की क्या है? यह मन क्या कार्य करता है? और प्राण क्या कार्य करता है? मेरे प्यारे! प्राण चित्रा बन जाता है। जैसे रूढ़ि में 'ओ३म् ' को हम एक चित्रा बना लेते हैं, जब यौगिक क्षेत्रा में जाएँगे तो प्राण को मानो उसी प्रकार का सूत्रा स्वीकार कर लेंगे।

मनस्तव

यह जो मनस्ताव है जिसको मन कहते हैं यह मन कैसा विचित्रा है कि सँसार का विभाजन करता रहता है। जितना भी विभाजनवाद तुम्हें द ष्टिपात हो रहा है, यह लोक-लोकान्तरों के रूप में क्यों न हो, प थ्वी के गर्भ में रसों के रूप में क्यों न हो, माता के गर्भ-स्थल में बेटा ! पुत्रा पुत्राी के रूप में क्यों न हो, यह विभाजन मनस्ताव किया करता है। इसको मन ही कहा जाता है। प्राण के द्वारा इसका विभाजन होता रहता है। प्राण नाना रूपों में विराजमान रहता है।

प्राण के स्वरूप

मैंने बहुत पुरातन काल में ऋषि-मुनियों की सभा में इन वाक्यों को स्मरण किया था। एक समय महर्षि सोमभानु मुनि महाराज के यहाँ एक दा ानिकों का एक समूह विराजमान था। उन ब्रह्मवेत्ताओं में यह चर्चा होने लगी थी कि मोक्ष किसे कहा जाता है? हम मोक्ष को जानना चाहते हैं। **महर्षि भ गु** ने इस सम्बन्ध में नाना प्रकार की अपनी चर्चाएँ प्रकट की। परन्तु उन्होंने मोक्ष का जो मूल कारण माना है वह मनस्ताव और प्राणत्ताव को एक सूत्रा में लाने का माना है। अब ये सूत्रा में कैसे आएँगे। **''मन और प्राण को एक सूत्रा में लाने का नाम मोक्ष कहा जाता है।''**

आज मैं इन विचारों को गम्भीर नहीं बनाऊँगा। यह गम्भीर विचार बनता चला जा रहा है। क्योंकि वेद का ऋषि ऐसी ही आज्ञा दे रहा है।

वेद का मन्त्रा आ रहा है ''प्राणत्व मनस्ताव इन्द्रताः मे ा ऋषितम् मेघाम् मोह रति वेदा।'' मेरे प्यारे! मानव का सबसे प्रथम विभाजन होता है। सबसे प्रथम इसका विभाजन **जब यह मानव इस सँसार में आता है तो नाना प्रकार की इन्द्रियों के द्वारा इसका विभाजन हो जाना प्रारम्भ हो जाता है।** उस प्राण से मानो मनस्ताव और प्राणत्ताव दोनों प थक हो जाते हैं। जब यह प थक होते हैं तो प्राण का विभाजन होना प्रारम्भ हो जाता है। प्राण इस ारीर में पाँच रूपों में विराजमान होता है। (१) प्राण, (२) अपान, (३) उदान, (४) समान और (५) व्यान-ये पाँच प्राण कहलाए जाते हैं। ये पाँच प्राण इस मानव ारीर में अपना कार्य करने लगते हैं। क्योंकि **जो मन है यह ज्ञान का माध्यम है, ज्ञान का प्रतिनिधि माना गया है।** ज्ञान के माध्यम से इस मन को सर्वत्रा कार्य प्रदान कर देता है। (१) **प्राण** नाभि केन्द्र से चलता है, यह नाना प्रकार की ज्ञान वाहक नाड़ियों में से रमण करता हुआ बाह्य-जगत में चला जाता है और बाह्य-जगत में करोड़ों खरबों परमाणु ले करके आन्तरिक-जगत में आ जाता है, यह तो प्राण का कार्य है।

मेरे पुत्रों ! (२) **अपान** है नाभि केन्द्र से निचले विभाग में अपान माना गया है। यह जो अपान है इसमें गुरुत्व है, इसमें आकर्षण ाक्ति है। वेद का ऋषि तो यह कहता है कि यदि इस प थ्वी में अपान ाक्ति नहीं होगी तो सर्व प थ्वियाँ सूर्य की किरणों के साथ सूर्य में आकर्षित हो जाएँगी। परन्तु यहाँ वेद का ऋषि कहता है, वैज्ञानिक रूपों से वर्णन करता हुआ कहता है कि इसमें गुरुत्व है। इसमें आकर्षण ाक्ति है और देखो आकर्षण ाक्ति अपान से मानी जाती है : अपान ही है जो मानव को दूर ले जाता है। मानव को गमन कराता है, अपान ही है जो मानव के जीवन की सुरक्षा कर रहा है। यह (१) मन, (२) बुद्धि, (३) चित्ता और (४) अहँकार जो अपने कारण में लय हो जाते हैं परन्तु प्राण ही जागरूक रहता है। एक अपान अपना कार्य कर रहा है। प्राण अपना कार्य कर रहा है। वहाँ मनस्ताव भी नहीं रहता। परन्तु 'आत्मा रहि अस्ताः।' मैंने इससे पूर्व काल में निर्णय देते हुए कहा कि आत्मा का इसके साथ सन्निधान रहता है, सन्निधान मात्रा से ही यह अपनी गति करता रहता है।

(१) प्राण, (२) अपान और (३) व्यान (४) उदान मानव के कँठ में रहता है। (३) **व्यान हम किसे कहते हैं?** हमारे इस मानव ारीर में ७२ करोड़ ७२ लाख १० हजार दो सौ दो नाड़ियाँ गिनी जाती हैं। वह जो (१) व्यान प्राण गति कर रहा है प्रत्येक नस नाड़ी में वह इनको ाक्ति प्रदान कर रहा है। उसको सँचालित कर रहा है, उनमें एक आभा उत्पन्न हो रही है। मेरे पुत्रों ! उस के प चात् (४) **समान** आता है, समान जितना भी रस बनाता है हमारे इस मानव ारीर में जठाराग्नि के उस रस को ले करके यह सर्व रस नाड़ियों में प्रदान कर देता है। सब नस नाड़ियों में प्रभा से गति होने लगती है, जहाँ जिसका योग होता है वहीं वह प्राप्त हो जाता है। इसके प चात् (५) **उदान** आता है। उदान का जो सम्बन्ध ा है वह कँठ से रहता है। जिस समय मानव इस ारीर को त्यागता है तो उदान के साथ में। उदान का सम्बन्ा मानो चित्ता से होता है जिसे हम अन्तःकरण कहते हैं। जिस अन्तःकरण में करोड़ों जन्मों के सँस्कार निहित होते हैं-इसका नाम अन्तःकरण माना गया है। वह चित्ता मिलान करता है प्राण से और इन दोनों का मिलान होता है आत्मा से, ये तीनों संगठित हो करके इस ारीर को त्याग देते हैं। जैसे उसी काल में सूक्ष्म ारीर होता है-सूक्ष्म ारीर को ले करके उदान प्राण इस ारीर को त्याग देता है। जब यह त्याग देता है तो इसके साथ में मानो एक धारा होती है। मानव को विचारना है कि जिस समय इस ारीर को त्यागा जाता है तो जितने विचार होते हैं अथवा मनस्ताव, प्राणत्व में, उदान में जो भी विचार होते है उसी के साथ में यह मानव ारीर की संज्ञा प्राप्त करता है। अथवा अन्य योनियाँ प्राप्त होती हैं। इसलिए वेद का ऋषि-एक वेद का मन्त्रा कहता है ''अन्ताम् ब्रह्मो व ते देवा अस्वाः औति वसन्डम् मानवाति औति रूद्रो प्राणाः'' **वेद का ऋषि कहता है** कि हे मानव! जिस समय तू अपने ारीर को त्यागने लगे उससे पूर्व ही मानव तेरा अभ्यास ऐसा होना चाहिए। यदि स्वर्ग की कामना का तेरा अभ्यास होगा तो स्वर्ग में जाएगा यदि देवत्व का तेरा विचार होगा तू देवताओं के पास होगा। मेरे प्यारे! यदि मोक्ष का विचार बनेगा तो मोक्ष होगा।

यह दा ार्निक सभा में विचार-विनिमय होता रहा। आगे वेद का ऋषि कहता है कि ये पाँचों प्राण हैं, इन पाँचों प्राण के द्वारा मानव ारीर में

गति करते रहते हैं। आज मैं सूक्ष्म ारीर की चर्चा करने नहीं आया। विचार-विनिमय केवल यह है कि जहाँ जैसा इस मानव का विचार है जिस विचार से उदान प्राण चित्ता को ले करके आत्मा को ारीरों को धारण करता है उस तारतम्य ारीरों को त्यागता रहता है। वेद का ऋषि कहता है ''ब्रह्मवेत्ताा हिरण्यम् रूद्रो सुप्रजाः मन चक्रति रूद्रो वेदाः'' **मन की प्रव त्ति के आध ार पर इस मानव की प्रतिभा, मानव को देवत्व प्राप्त हो जाता है।**

आज वेद का ऋषि कहता है, आचार्य कह रहा है ये जो मानव ारीर में पाँचो प्राण हैं जब मन इनको कार्य प्रदान कर देता है उसके प चात् (१) नाग, (२) देवदत्ता, (३) धन जय, (४) कूर्म और (५) औकल। **ये पाँच प्राण सूक्ष्म प्राण होते हैं** अपना कार्य प्रारम्भ कर देते हैं। जिसको हम **नाग प्राण** कहते हैं। (१) नाग प्राण वह होता है जब मानव को कामना आती है, क्रोध की उत्पत्ति आती है, अति काम आता है उस समय वह जो नाग प्राण है वह ऊ र्व मुख हो जाता है और मानव का जैसे अम त होता है वह नाग प्राण अपने में ाारण करने लगता है, उसका हनन कर लेता है इसीलिए वेद के ऋषियो ने यह कहा है कि हे मानव ! तू क्रोध ा न कर, हे मानव तू अपने जीवन को अति कामनाओं के क्षेत्रा में न ले जा अन्यथा यह जो नाग प्राण है यह तेरे सुऔत को हनन करता हुआ अपने में धारण करता हुआ अम त को निगलता हुआ विष को देता रहता है। वही विष इस मानव ारीर में नाना प्रकार के रोगों अथवा नाना प्रकार की भयँकर दैविक विपदाओं में उत्पन्न हो करके मानव को नाना प्रकार की आपत्तियाँ, नाना प्रकार के कष्ट धारण करने पड़ते हैं।

आगे (२) **देवदत्ता प्राण** क्या करता है कि जितना भी सौन्दर्य है उसको अपने में धारण करता है, अपनें में समाहित कर लेता है और समाहित करके उसको चित्ता में प्रदान कर देता है। उसमें एक प्रसारण ाक्ति, उसमें एक रूप ाक्ति कहलाई जाती है।

(३) **धन जय** क्या करता है? यदि नाग अपना कार्य किसी कारण से त्याग देता है तो धन जय अपना कार्य प्रारम्भ कर देता।

(४) **कूर्म** वह कहलाता है जिससे ब्रह्मवेत्ताा की उत्पत्ति होती है, ब्रह्म में वह रमण करने लगता है। इसी प्रकारा देवदत्ता, धन जय, कूर्म और

औकल मानो ब्रह्मे मानो वह उद् बुध अग्नि को उत्पन्न करके वह ॅु-लोकों में ले जाता है। मानव को स्थूल बनाना, सूक्ष्म बनाना यह (४) कूर्म और (५) औकल दोनों प्राणों का कार्य है। **यदि हम उदान प्राण से कूर्म और औकल प्राण का मिलाप करना जानते हैं तो सूक्ष्म ारीर बन जाता है,** जितना सँकुचित अपने ारीर को हम बना लेते हैं। जैसा बेटा! तुमने स्मरण किया होगा कि त्रोता के काल में महाराजा हनुमान इस क्रिया को जानते थे। वह सुरसा के मुख में मुखारबिन्दु में परणित हो गए, अपने ारीर को इतना आँकुचन बना लिया। क्योंकि प्रऔति की पाँच प्रकार की गति मानी जाती। मानो (१) आँकुचन (२) प्रसारण (३) ऊर्ध्व {उत्क्षेपणम् } और (४) ध्रुवा {अवक्षेपणम् } और (५) गमनम् पाँच प्रकार की गति प्रऔति की है। इन पाँचों प्रकार की गतियों को जानने वाला योगे वर बेटा! अपने को स्थूल रूपों में ला सकता है और सूक्ष्म में आँकुचन के द्वारा बना सकता है। इसी प्रकार योगीजन इस महान् विज्ञान को जानते हैं। इस प्राण की क्रियाओं को जानते हैं। इसीलिये प्रत्येक मानव को प्राणायाम करना चाहिए। जो प्राणायाम करता है उस मानव का जीवन सुन्दर बनता रहता है।

प्राणायाम करने की क्रियाएँ

एक समय मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने यह वर्णन कराया कि तुम प्राणायाम करो। आसन तुम्हारा सुन्दर है। आसन पर विराजमान हो करके प्राणायाम करने की क्रियाएँ उन्होंने प्रकट कीं। उन क्रियाओं में जब अनुरत (लीन) हो गए तो कुम्भक जो प्राणायाम करते थे ऐसा प्रतीत होता था जैसे अन्तरिक्ष में रमण कर रहे हों। अन्तरिक्ष में हमारी सारे ारीर की गति उत्थान कर रही है। इसी प्रकार प्राणायाम करने से मानव के जीवन में एक महत्ताा आती है और मानव के चित्ता में जो सँस्कार होते हैं वे सँस्कार ऐसे जैसे मानो अन्न को हम अग्नि में तपा देते हैं उनमें उपज आदि नहीं रहती। इसी प्रकार जो रेचक कुम्भक प्राणायाम करता है, नाग, कूर्म और औकल को मिलान करके प्राणों से मिलान करता है। मेरे प्यारे ! यह जो विचित्रा अग्नि है 'प्राणा प्रभे' अणु जो अग्नि है उसमें मानव के सँस्कार निर्वीय हो जाते हैं, वह मानव का आवागमन वायु में से होने लगता है।

मेरे पुत्रों ! आज मैं वि ोष चर्चा प्रकट करने नहीं आया हूँ, विचार

तुम्हें यह देने आया हूँ कि आज हमें प्राणत्व को विचारना चाहिए। यह प्राण क्या है? हमारे यहाँ कुछ क्रियाएँ ऐसी मानी जाती हैं। हमारे यहाँ चिकित्सा भी प्राणों के द्वारा होती है। **तीन प्रकार की चिकित्सा होती है**-एक औषधि ा के द्वारा, एक जल के द्वारा और एक प्राणों के द्वारा। ये तीन प्रकार की चिकित्सा हमारे यहाँ परम्परा से मानी जाती हैं। जितनी चिकित्सा हैं वह सब प्राण के अन्तर्गत आती हैं। क्योंकि औषधियों में प्राण ाक्ति है। इसलिये वह जो चिकित्सा है वह प्राण के द्वारा ही मानो उद् बुध होती है, इसको प्राण में ही उद् बुध किया जाता है। जो प्राण को जानता है उन्हें यह जो जल की और औषध की प्रतिक्रिया है वे ाान्त हो जाती हैं।

अब मेरे प्यारे पुत्रों ! मैं विचार देता हुआ दूर न चला जाऊँ। **विचार-विनिमय यह कि हम प्राण को अच्छी प्रकार जानने वाले बनें।** दा ानिकों ने यह विचारा कि हमारे यहाँ मानव कितना व्यापक बन गया। व्यापकता आ गई (१) नाग, (२) देवदत्ता, (३) ान जय, (४) कूर्म और (५) औकल आदि प्राणों की उत्पत्तिा हो गई। (१) प्राण, (२) अपान, (३) उदान, (४) समान और (५) व्यान हो गए। ये दस प्राण बन गए। दस प्राण बनने के प चात् बेटा ! मन की प्राप्ति हो गई। मन ने इन पाँचों प्राणों से मानव का यह ब्राह्य-जगत बन गया। इन्द्रियों के रूप में प्रकट हो गए। इन्द्रियों का कार्य मानों स्वतः प्रारम्भ हो गया। इन्द्रियों का अपना-अपना विषय प्रारम्भ हो गया। प्रत्येक देवता भी इन्द्रिय में विलीन हो गए। ये इन्द्रियाँ अपना कार्य करने लगीं। चक्षु सूर्य बनकर रहने लगा, घ्राण प थ्वी बन करके रहने लगी, रसना चन्द्रमा बनकर रहने लगा एवं रस बन करके, इसी प्रकार मानव स्वरूप बन करके रहने लगा, त्वचा वायु बन करके रहने लगी। इसी प्रकार प्रत्येक इन्द्रिय अपने-अपने कार्य में रत्ता होने लगी। उनका अपना एक देवता हो गया। उसी देवता में देवतत्व को प्राप्त होने लगे। **यह आन्तरिक-जगत बन गया।** आन्तरिक-जगत् से बाह्य-जगत बन गया। जब बाह्य जगत में इन्द्रियों को अपना कार्य परणित कर दिया, मन को प्राप्त कर दिया मानो मन के द्वारा इन्द्रियाँ अपना कार्य प्रारम्भ करने लगीं मानो प्राण का उपभोग हो गया क्योंकि प्राण का विभाजन हो गया।

त ष्णा

मेरे पुत्रों ! मानव के द्वारा अति कामना जब उत्पन्न होने लगी, अति द्रव्य की कामना आ गई और नाना प्रकार के देखो अवरो। आ गए। तो उसके प चात् मानव के द्वारा एक आँधि उत्पन्न हो गई। इसका नाम त ष्णा माना जाता है और त ष्णा की उत्पत्ति होते ही दो भाग उत्पन्न हुए। मान और अपमान के। मेरे प्यारे ! मान आता है तो वह भी म त्यु का कार्य करता है। अपमान आने लगता है तो वह भी म त्यु का कार्य है। अब मानव म त्यु के मुखार्बिन्दु में परणित हो गया। म त्यु ही म त्यु द ष्टिपात होने लगी। आज्ञा के अनुसार कार्य होता है तो अभिमान की उत्पत्ति हो जाती है। आज्ञा के अनुसार नहीं होता तो निरा ा म त्यु का जन्म हो जाता है। मेरे प्यारे ! वही म त्यु है जो मानव को सदैव दुःखित करती रहती है। उसी के ग ह में रमण करता रहता है कि मेरी म त्यु न हो जाए, अमुक स्थान पर चला जाऊँ तो मेरी म त्यु न हो जाए। म त्यु के बिन्दु में रमण करता रहता है।

मेरे प्यारे ! देखो मान-अपमान उत्पन्न हो गए, अभिमान की उत्पत्ति हो गई, निरा ा की उत्पत्ति हो गई, **अति कामना उत्पन्न होने का नाम त ष्णा कहलाता है।** अब ऋषि-मुनियों ने इसका बाह्य जगत् बना दिया। बाह्य जगत् में जहाँ भी द ष्टि जाती है मानव की वहीं अग्नि परीक्षा हो रही है। मेरी पुत्री द ष्टिपात आती है, पुत्रा द ष्टिपात आता है, उनकी इच्छा की पूर्ति करने में मानव लगा रहता है। तो मेरे प्यारे ! अन्तिम परिणाम को विचारता है। ान्ति से तो उसका अन्तिम परिणाम कुछ द ष्टिपात नहीं आता। उसके प चात् मानव विचारता है अरे ! मुझे तो आत्म-कल्याण भी करना चाहिये। सँसार में, मेरा आत्म कल्याण कैसे होगा? तो मेरे पुत्रों ! कहा जाता है, वेद के दा निक आचार्य कहते हैं कि ऋषियों ने विचारा कि सँसार को सँकुचित बनाओ। सबसे प्रथम ऋषियों ने यह विचारा कि त ष्णा को तुम व ाभूत करो। त ष्णा को जब अपने व ाभूत किया गया-अति कामनाओं का नाम ही त ष्णा माना जाता है। वैदिक आचार्यों ने इस त ष्णा को रक्त बीज कहा है। क्योंकि एक **रक्त बीज** से एक त ष्णा उत्पन्न हुई। एक पूर्ण होती है द्वितीय उत्पन्न है, द्वितीय पूर्ण हुई त तीय उत्पन्न हो जाती है। यह कामनाओं का क्षेत्रा बन जाता है। त ष्णा बलवती होती रहती है, वह इतनी स्थल को ग्रहण करने लगती है कि अन्त में मानव

मौन हो जाता है और यह कहता है कि कहाँ जाऊँ?

मोक्ष का मार्ग

मुनिवरो ! उसके प चात् दा निकों ने विचारा कि हमें मोक्ष को जाना है। यह सब इस ारीर का बाह्य-जगत् बना दिया। मानव का बाह्य-जगत् बन गया। अब वह इस सँसार को विचारता है और अब अपने जीवन को सँकुचित बनाता है। सबसे प्रथम वह कामना के क्षेत्रा में जाता है। रक्त बीज को विजय करता है। रक्त बीज को कैसे विजय करता है? वह गायत्री छन्दों का आश्रय लेता है। वह प्राणत्व का आश्रय ले करके सबसे प्रथम त ष्णा को विजय करता है। त ष्णा कैसे विजय की जाती है? **सबसे प्रथम मानव में ध्यान की धरणा होनी चाहिये।** धारणा में क्या किया जाता? वह ार्म है। **धर्म को हम धरणा कहते हैं।** धर्म क्या है? मौलिक जो रूप है उसको धारण करके धर्म ध्वनि को अपनाता है। धर्म-ध्वनि को अपना करके मनस्ताव को प्राण के द्वारा मिलान करने का प्रयास करता है। जब वह मन और प्राण के द्वारा त ष्णा को विजय करता है तो उसके प चात् जो इन्द्रियों का विषय है, इन्द्रियों के जो देवता हैं उन देवताओं को एक सूत्रा में लाने का प्रयास करता है। जैसे चक्षुओं का देवता सूर्य है और घ्राण का देवता प थ्वी है इस रसना का देवता जल है और चन्द्रमा दो रस माने जाते हैं, देवता माने जाते हैं। इसी प्रकार श्रोत्रों का देवता दि ा है इन दि ाओं को अपने में ारण करता है, त्वचा का देवता वायु है, उपस्थ का देवता चन्द्रमा है और हस्तों का देवता भी दि ा मानी गई है। इन सब देवताओं को जानकर और देवताओं को एकत्रित करके, उनका समाज एकत्रित करके कहता है कि अब मैं अपने कल्याण में जाना चाहता हूँ।

मेरे प्यारे पुत्रों ! इन देवताओं को धारण करके जानता हुआ इनके दूत को जानने लगता है। वायु के क्षेत्रा में जाता है तो वायु के साथ में गमन करता उड़ान उड़ने लगता है। अग्नि के द्वार पर जाता है तो अग्नि इसको समाप्त नहीं कर सकती। यदि वह चन्द्रमा के क्षेत्रा मे जाता है तो इसको विभक्त नहीं कर सकता। इसी प्रकार इन्द्रियों के विषय को जान करके देवताओं को एकाग्र करके उसको प्राण रूपी सूत्रा में पिरो देता है। (१) प्राण, (२) अपान् , (३) समान, (४) व्यान, (५) उदान, (६) नाग, (७) देवदत्ता,

(८) ान जय, (९) कूर्म और (१०) औकल इन दसों प्राणों को एक सूत्रा में लाता है। एक सूत्रा में ला करके यह आत्मा इसके ऊपर विश्राम करता है। मनस्ताव और प्राणत्व जो सँसार का विभाजन कर रहा था, जो मानव ारीर में विभक्त हो रहा था एक सूत्रा में आ करके आत्मा उनके ऊपर विश्राम करके अब मन और प्राण दोनों को एक सूत्रा में लाने के प चात् आत्मा इसमें रत्ता हो जाता है। गुणी कदापि भी प थक् नहीं होता। उसको मोक्ष कहा जाता है।

मोक्ष किसे कहते हैं? मोक्ष उसे कहते हैं जहाँ मन और प्राण का विभाजन हो गया नाना रूपों में उसको एक सूत्रा में लाना। एक ही आँगन में लाने का नाम मोक्ष कहा जाता है। आज मैं मोक्ष की उड़ान उड़ने लगा हूँ। विचार यह कि मानव का बाह्य-जगत जब लोगों में तत्वों पर विचार विनिमय प्रारम्भ करता है, इन प च महाभूतों पर गति प्रारम्भ हो जाती है तो वैज्ञानिक बन जाता है। क्योंकि यह मन अणु परमाणुओं का विभाजन होता द ष्टिपात करता है। ाब्द उच्चारण होता है वह अन्तरिक्ष में जाता है। अन्तरिक्ष में जिस मानव का ाब्द है उसका चित्रा दूसरे आँगन में गति कर रहा है। वह भी अन्तरिक्ष को जा रहा है। मानो देखो श्रोत्रों के द्वारा चित्राण हो रहा है।

आज का हमारा वैदिक ऋषि क्या कह रहा है? वेद का ऋषि कहता है कि **हे मानव! तू प्राणायाम कर और प्राण की क्रिया को जान।** क्योंकि प्राण ही सँसार में गति कर रहा है। यह प्राण ही है जो प थ्वी में नाना प्रकार की वनस्पतियों में जो भिन्न प्रकार का रसा-स्वादन हो रहा है। यह कौन है? यह प्राण का ही विभाजन होता है। मन इसको विभक्त करने वाला है। देखो एक साधारण मन कहलाता है और एक वि वभान है। वि वभान वह मन कहलाता है जिसके द्वारा सर्वत्रा ब्रह्माण्ड विभक्त होता हुआ द ष्टिपात हो रहा है। नाना प्रकार का स्वादन, जलों का विभाजन होता हुआ माता प थ्वी वसुन्धरा के गर्भ में जो नाना जलों का विभाजन हो रहा है, जल को ाक्ति ाली बनाया जा रहा है वह मन और प्राण के द्वारा बनाया जा रहा है। इस माता वसुन्धरा के गर्भ में नाना प्रकार का जो खनिज है उस खनिज में भी मन और प्राण ही गति कर रहा है। यह वि वभान मन कहलाया जाता है। **मानव के ारीर में जो गति**

कर रहा है वह साधारण मन है।

आज मैं ब्राह्य-जगत और अन्तरिक-जगत की तुलना करने लगा हूँ। बाह्य-जगत में जो क्रिया हो रही है। क्रीड़ा कर रहा है वही आन्तरिक-जगत में हो रही है। तो इसलिए आज जब हम मोक्ष को जाना चाहते हैं, परमात्मा के आँगन में जाना चाहते हैं तो इन दोनों प्रकार के जगतों को जान करके मानव परमात्मा को प्राप्त हो जाता है। वही बेटा **उषरकेतु** कहलाया जाता है। आज वि ोष व्याख्या देने नहीं आया हूँ विचार तुम्हें यह देने के लिये आया हूँ कि मानव को अपने जीवन को कितना गम्भीर बनाना है। कितना आ चर्य चकित बनाना है। समय मिलेगा, इससे पूर्व की चर्चा में पित याज्ञों की चर्चा करूँगा।

प्राणायाम का क्रम

आज का विचार हमारा क्या कह रहा है कि हम परम पिता परमात्मा की आराधना करते हुए प्रत्येक मानव को प्राणायाम करना चाहिए और कैसे करना चाहिए? पूज्यपाद गुरुओं ने जो वर्णन कराया है कि आसन पवित्रा हो, आसन कु ाा का हो। जहाँ आसन हो वहाँ सुगन्धि पवित्रा हो, आसन कु ाा का हो। जहाँ आसन हो वहाँ सुगन्धि युक्त हो। उस काल में ानैः-ानैः मानव को प्राणायाम करना चाहिए सबसे प्रथम रेचक करना चाहिए। उसके प चात् कुम्भक करना चाहिए। कुम्भक के प चात् पूरक करना चाहिए। मानो ानैः-ानैः अपने प्राण को ऊर्ध्व में ले जाना ानैः-ानैः निचली स्थली में त्यागना। ानैः-ानैः उसको अपने में यथा ाक्ति से कुम्भक कर लेना और रेचक कर लेना बाह्य त्याग करके रेचक में ाान्त हो जाना। ऐसे प्राणायाम करते हुए मानव अपने प्राण की गति को ऊ र्व बनाने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। यह अभ्यास जब प्राणी को होता है वह अन्त में भी इसी विचार को ले करके जब मानव ारीर को त्यागता है तो प्राण के द्वारा इस ारीर को त्यागा जाता है तो मानव देव लोक को प्राप्त होता है। उसकी आत्मा देव लोक को प्राप्त होती है।

यह विषय इतने गम्भीर हैं इसको जानने के लिए मानव को

तप की आव यकता है। ब्रह्मचरि यामि। कल में इसके सम्बन्ा में वि ोष चर्चाएँ प्रकट करूँगा। आज का विचार-विनिमय क्या कि दा र्निक समाज में यह विचार हो रहा था कि हम मोक्ष को जानना चाहते हैं। मोक्ष की व्याख्या चाहते हैं। तो ऋषियों ने यह कहा है कि मोक्ष मन और प्राण को एक सूत्रा में लाना। इसको बाह्य से जानते-जानते व्यापक रूप बनाते हुए आँकुचन करने का नाम मोक्ष कहलाया जाता है। आत्मा जब उनके ऊपर विश्राम करके जब गमन करता है तो वह मोक्ष की व त्तियों को प्राप्त कर लेता है। इसीलिये वेद का ऋषि कहता है **''अन्तमथे सो मथा।''** कि अन्त में हमारा विचार मन्थनमय होगा वही तुम्हें प्राप्त होगा। मन और प्राण को एक सूत्रा में लाना, आत्मा को विश्राम करना।

आगे ऋषि वि ोष केतुक ऋषि ने कहा कि जब मन और प्राण और आत्मा ये तीनों संगठित हो जाते हैं तो उसके प चात् क्या गति बनती है। इसमें वि ोष केतु ने यह कहा कि मेरे विचार में तो ऐसा आता है कि **जिस समय मन और प्राण एक सूत्रा में आ जाते हैं तो उस अनुभव को मानव वर्णन करने में असमर्थ रहता है। उसका वर्णन नहीं किया जाता।** क्योंकि वह परमात्मा में अव्याहत गति से रमण करता है। उस अनुभव का वर्णन करना असमर्थ है। क्योंकि वाणी का विषय, इन्द्रियों का विषय वहाँ तक रहता है जहाँ तक एक दूसरे का मिलान नहीं होता और जब मिलान हो जाता है तो उस अनुभव को इन्द्रिय वर्णन नहीं कर सकती। इसमें नेति-नेति का प्रतिपादन किया जाता है।

यह है आज का वाक्य। अब मुझे समय मिलेगा तो ोष चर्चाएँ मैं कल प्रकट करूँगा। आज का यह वाक्य समाप्त अब वेद का पाठ होगा इसके प चात् वार्ता समाप्त हो जाएगी।

दिनांक : २ मई १९७६
समय : प्रातः ७ बजे।
स्थान : निर्मल वेदान्त सम्मेलन,
अम तसर

।। ओ३म् ।।

मृत्यु और जीवन

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस महामना परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते रहते हैं। क्योंकि वह परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं और उसका ज्ञान और विज्ञान भी अनन्तमयी माना गया है। इसीलिए हमारा वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा को अनन्तवान् कहता है और जितना भी यह जड़ जगत् अथवा चैतन्य जगत् हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वह परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं। जो उस परमपिता परमात्मा को मानो अन्तर्हृदय से उसको निहारता रहता है उसको वह प्रायः दृष्टिपात आते रहते हैं। तो वह परमपिता परमात्मा जो जड़ और चेतना में अपने क्रियाकलापों में सदैव रत्त रहता है हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा को सदैव जानने का प्रयास करें। क्योंकि हमारे यहाँ प्रत्येक वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है जिस प्रकार माता का पुत्र माता की गाथा गा रहा है। जिस प्रकार यह पृथ्वी इस ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है इसी प्रकार प्रत्येक वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा का यशोगान गा रहा है अथवा उसकी गाथा गा रहा है और उसका यह वर्णन करता है कि परमपिता परमात्मा है। मानो योगेश्वर अपने में निश्चयात्मक उस परमपिता परमात्मा को प्रायः अपने में धारण करते रहते हैं।

ब्रह्मवर्चस का गान

आओ मुनिवरो! यह आज का हमारा वेदमन्त्रः जहाँ परमपिता

परमात्मा की महिमा का यशोगान गान गा रहा है अथवा उसके गुणों का वर्णन कर रहा है जिस प्रकार माता का निर्णय देने वाला उसका पुत्र है। इसी प्रकार ब्रह्माण्ड की जब गाथा गाई जाती है तो उसके मूल में पृथ्वी रहती है क्योंकि जब से संसार की रचना हुई है, नाना प्रकार के वैज्ञानिक हुए हैं परन्तु उन वैज्ञानिकों ने परमाणुओं के ऊपर अन्वेषण किया और जब वह परमाणुवाद में क्योंकि वह पृथ्वी के गर्भ में ही जाना जाता है और पृथ्वी के गर्भ को जानता हुआ मानव विज्ञान के वाङ्मय में प्रवेश हो जाता है। तो इसीलिए उस परमपिता परमात्मा का जो ब्रह्माण्ड है उसका यशोगान गाने वाली यह पृथ्वी है। इसी प्रकार प्रत्येक वेदमन्त्रः अपने में जब गान गाता रहता है, अपने में जब यशोगान गाता है और गान गाता हुआ कहता है ब्रह्मणं ब्रह्मा वर्चस्सुतम् ब्रह्म लोकाम्ः मेरे प्यारे! वह ब्रह्मवर्चोसी है और ब्रह्म वर्चस कहलाया गया है। जब जिज्ञासु अपने में जिज्ञासा करता है तो परमात्मा का निश्चयात्मक उसका विश्वास करता है और विश्वास से ही मुनिवरो! देखो परमात्मा को निश्चय स्वीकार करता रहता है। तो वह परमात्मा का यशोगान गान गाने वाला प्रत्येक वेदमन्त्र बेटा! अपने में गान गाता रहता है।

आओ बेटा! मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करने नहीं आया हूँ केवल तुम्हें परिचय देने के लिए आया हूँ और वह परिचय क्या है कि हम परमपिता परमात्मा की महिमा का गान गाते रहें और ब्रह्मज्ञान में मानो अपने को ले जाते ब्रह्मवेत्ता बनाने के लिए सदैव तत्पर रहें। तो मेरे प्यारे! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब ऋषि-मुनि अपनी-अपनी एकन्त स्थलियों पर विद्यमान हो करके नाना प्रकार का विचार-विनिमय करते रहे हैं। नाना प्रकार का जो विचार है वह अपने में बड़ा भव्यतव में माना गया है क्योंकि ब्रह्मज्ञान का बखान करने वाला ब्रह्म की जिज्ञासा में सदैव निहित रहता है।

यम

बेटा! आज का हमारा वेदमन्त्रः यह कह रहा है अमृतम् मृयं यमा स्वञ्जनम् देवत्वम् लोकाः क्या वह परमपिता परमात्मा को यम कहते हैं और यम उसे कहा जाता है जो मृत्यु से परे होता है। मेरे प्यारे! देखो वह

परमपिता परमात्मा मृत्युञ्जम् ब्रह्मणां लोकाम् वसुतरम् तो बेटा! देखो लोकप्रियता में भी वास्तव में यम कहते हैं जो मृत्यु को विजय कर लेता है। मैंने बेटा! तुम्हें कई कालों में वर्णन करते हुए कहा है क्या आत्मा परमात्मा का ध्यानावस्थित हो करके मानों मृत्युञ्जय बन जाता है, मृत्यु को अपने से दूरी कर देता है।

महर्षि जमदग्नि आश्रम में मृत्यु पर चिन्तन

आओ बेटा! मैं आज तुम्हें एक सभा में ले जाना चाहता हूँ जिन वाक्यों को मैंने पुरातन कालों में तुम्हें वर्णन करते हुए कहा है। आज भी मुझे वह वाक् स्मरण आते रहते हैं। मेरे प्यारे! मुझे वह काल स्मरण है जब महात्मा जमदग्नि के यहाँ एक सभा हुई और उस सभा में मुनिवरों! महर्षि प्रह्वाण, महर्षि शिलभ, महर्षि दालम्य, महर्षि रेवक और वैशम्पायन और महर्षि विभाण्डक, देवर्षि नारद, ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी कवन्धि, ब्रह्मचारी रोहणीकेतु और मुनिवरों! देखो उनके मध्य में महर्षि पिप्पलाद, चाक्राणी गार्गी और भी नाना ऋषि-मुनियों का बेटा! एक समूह विद्यमान था! तो वहाँ मुनिवरो! देखो महात्मा जमदग्नि और पारेत्वरं ऋषि महाराज दोनों एक वेदमन्त्र के ऊपर अध्ययन कर रहे थे और वह अध्ययन था मृत्युञ्जयम् ब्रह्मा मृत्यु वर्णम् ब्रव्हे लोकाम् क्या वह पिप्पलाम् ब्रहे बेटा! देखो वह अपने में अध्ययन करते हुए महात्मा जमदग्नि ने यह कहा क्या यह मृत्यु क्या है जिसके ऊपर मानव सदैव व्याकुल रहता है। मेरे प्यारी माताएँ मानों देखो पुत्र के विच्छेद होने से कितनी व्याकुलता होती हैं। मानव अपने में व्याकुल होता रहता है यह है क्या? तो महर्षि पिप्पलाद मुनि महाराज अमृतम् ब्रह्मा देखो सभा में विद्यमान थे परन्तु उससे पूर्व काल में महात्मा जमदग्नि और पारेत्वर ऋषि महाराज ने अपने में विचारा कि ब्रह्मवेत्ताओं का एक समूह एकत्रित हो। तो वह समूह इसलिए एकत्रित हुआ क्या हम मृत्यु के ऊपर कुछ विचार-विनिमय करेंगे।

मेरे प्यारे! देखो यहाँ ऋषि मुनि अपने में जब एकत्रित हो गये तो महात्मा जमदग्नि ने बेटा! एक वेदमन्त्र का उद्गीत गाया और वेदमन्त्र था मृत्युञ्जम् ब्रह्मा लोकाम् वसु देवत्वाम् ब्रह्मे वाचन्नमम् ब्रह्मा मृत्यु मेरे प्यारे! देखो उन्होंने कहा कि वेदमन्त्र कहता है कि यह मृत्यु क्या है? जिस मृत्यु

के ऊपर मानव परम्परागतों से बेटा! अपना अन्वेषण करता चला आया है और जिस मृत्यु के ऊपर नाना दार्शनिक विद्यमान हो करके अपने दर्शनों की प्रायः मीमांसा करते रहे हैं। जहाँ बेटा! देखो यहाँ अमृतम् नाना ऋर्षि-मुनि अपने में मीमांसक बन करके और यहाँ महात्मा दधीचि जैसे ऋषि-मुनियों ने मृत्यु के ऊपर अन्वेषण किया और गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने भी तप किया इसी सम्बन्ध में।

चाक्राणी गार्गी का विचार

मेरे प्यारे! देखो इस सभा में उन्होंने वेदमन्त्र का उद्गीत गाया तो सभा में मुनिवरो! एक दूसरा एक दूसरे को दृष्टिपात करने लगा। परन्तु इतने में चाक्राणी गार्गी उपस्थित हुई और चाक्राणी गार्गी ने कहा हे ब्रह्मवेताओं यदि तुम्हारी आज्ञा हो तो मैं ऋषि के प्रश्नों का उत्तर दूँ? तो उन्होंने कहा बहुत प्रिय, प्रारम्भ हो। तो बेटा! उनके विचार प्रारम्भ होने लगे। तो महात्मा जमदग्नि अवृति ऋषि मुनियों की सभा में बेटा! चाक्राणी गार्गी ने यह कहा क्या शरीर का और आत्मा का, दोनों का विच्छेद हो जाना ही, पृथक-पृथक हो जाना ही मानो यह मृत्यु मानी जाती है और यह अपने में अपने-अपने अव्ययों को प्राप्त होते रहे हैं।

महात्मा कवन्धि की जिज्ञासा

मेरे पुत्रो! देखो जब इस प्रकार का विचार विनिमय होने लगा तो देखो महात्मा कवन्धि ने कहा क्या हे माते यह वाक् हमने स्वीकार कर लिया है परन्तु शरीर और आत्मा के विच्छेद का नाम मृत्यु नहीं कहा जाएगा, यह मृत्यु नहीं बनता क्योंकि जिस वस्तु का निर्माण हुआ है उस वस्तु का विच्छेद होना बहुत अभिवार्य है। मानो दोनों का पृथक्-पृथक हो जाना, उनका अपना अस्तित्व समाप्त नहीं हुआ। मेरे प्यारे! देखो जब महात्मा ने यह वाक् कहा तो माता चाक्राणी गार्गी शान्त हो गई और यह कहा कि मेरे विचार में तो ऐसा ही आता है। मेरे आचार्यों ने मुझे इसी प्रकार की दीक्षित बनाया है। मैं आगे इसका विचार-विनिमय अवश्य कर पाऊँगी।

महर्षि पिप्पलाद मुनि महाराज का निर्णय

मेरे पुत्रो! देखो इतने में महर्षि पिप्पलाद मुनि उपस्थित हुए और

पिप्पलाद मुनि ने कहा कि अवऽाम् भूतम ब्रह्मा लोकाम् वचुसतम्। वेद का मन्त्र उच्चारण करके बोले ऋषिवर क्या मैं मृत्यु का अभाव स्वीकार करता हूँ, मृत्यु अपने में कोई वस्तु नहीं होती। मेरे पुत्रो! देखो जब यह वाक् आया तो ऋषि मुनि अपने में शान्त हो गये। मेरे पुत्रो! उन्होंने कहा तो देवर्षि नारद मुनि ने इस प्रकार उनका समर्थन किया और महात्मा पारेत्वर ऋषि महाराज ने कहा वाक् यथार्थ है क्या मृत्यु अपने में कोई मृत्यु नहीं होती। क्योंकि मृत्यु नाम अन्धकार का है और मानो देखो अन्धकार ही अन्धकार को हम शरीराम् भूतम् ब्रह्मा वह अज्ञान है और अज्ञान का नाम मृत्यु माना गया है इसलिए अज्ञान नहीं होना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो इस प्रकार का जब विचार-विनिमय होने लगा तो मुनिवरो! देखो वह सायँकाल का समय हो गया, सँध्याकाल हो गया। सँध्याकाल को ऋषि-मुनि अपने-अपने कक्षों में जा पहुँचे।

महर्षि पिप्पलाद मुनि शकुन्तका सम्वाद

महर्षि पिप्पलाद मुनि को बहुत समय हो गया था अपने आश्रम को त्यागे हुए। उनका निकटतम आश्रम था महात्मा जमदग्नि के। तो बेटा! वहाँ से उन्होंने गमन किया, रात्रि काल में अपने गृह में पहुँचे। उनकी पत्नी शकुन्तका दृष्टिपात करते ही बड़ी व्याकुल होने लगी। पिप्पलाद मुनि बोले देवी तुम व्याकुल क्यों हो रही हो? उन्होंने कहा पुत्राम् मृत्युम् भू समभवप्रहे हे प्रभु मेरा एक पुत्र था वह मृत्यु को प्राप्त हो गया। सप्तम् ब्रह्मा, देखो सात वर्ष का ब्रह्मचारी मेरे से दूरी हो गया है और वह मृत्यु को प्राप्त हो गया। महर्षि पिप्पलाद मुनि बोले देवी मैं ब्रह्मवेत्ताओं के समाज में से मेरा आगमन हो रहा है और मैं अपने में निर्णय कर चुका हूँ कि मृत्युम् भावाम् प्रमहे अभावम् ब्रह्मे यह मृत्यु तो अभाव में है यह अभाव है मृत्यु का क्योंकि मृत्यु अपने में कोई मृत्यु नहीं होती।

पुत्र कहाँ चला गया

मेरे पुत्रो! तो उन्होंने कहा तो भगवन् मेरा पुत्र कहाँ चला गया और यह मेरा बाल्य, यह मेरा शरीर क्या है? उन्होंने कहा कि हे देवी पुत्र तो अपने संस्कारों के आधार पर किसी माता के गर्भ में प्रवेश हो गया है आत्मा अपने चित्त के संस्कारों को ले करके। परन्तु रहा यह कि मेरा

शरीर क्या है तो हे देवी यह परमाणुओं का समूह है। परमाणु एकत्रित होते हैं मानों संगठित होते हैं और उसी से तुम्हारे शरीर का निर्माण होता है। मानो देखो यह परमाणु आते रहते हैं बलवती होता रहता है मानव। जब देखो शिशु रूप में है और माता के गर्भस्थल में जरायु रूप में है वही बाल्य जगत् में आ करके शिशु रूप बन जाता है और जब शिशु रूप में आगे अग्रणीय बनता है तो परमाणुओं का मिलान होता रहता है और शरीर को स्पर्श करते रहते हैं आहार के द्वारा, व्यवहार के द्वारा तो वही बाल्य मानो देखो युवा हो जाता है। युवा हो करके वही शरीर का जिसका निर्माण हुआ है वही मानों देखो वृद्धपन को प्राप्त हो करके इस संसार से चला जाता है। तो देवी यह परमाणुओं का संघात है और परमाणुओं की प्रतिभा कहलाती है।

परमाणुवाद कहाँ रहता है

मेरे पुत्रो! देखो जब उन्होंने ऐसा कहा तो पिप्पलाद मुनि की देवी ने कहा हे प्रभु चलो मैंने यह आपका वाक् स्वीकार कर लिया परन्तु मैं जानना चाहती हूँ जब यह मेरा शरीर इस रूप में नहीं था तो यह परमाणुवाद कहाँ रहता था? उन्होंने कहा जब तुम्हारा शरीर इस रूप में नहीं था तो यह परमाणुवाद माता के गर्भस्थल में मानों तुम्हारे शरीर का निर्माण कर रहे थे, वह निर्माण में प्रवेश हो रहा था। निर्माणवेत्ता निर्माण करता रहता है। मानव के शरीर का जब निर्माण होता है तो निर्माणवेत्ता वह जो चैतन्यदेव है जो निर्माण करने वाला है वह निर्माण करता रहता है। माता के गर्भस्थल में निर्माण हो रहा है परन्तु मेरी भोली माँ उस निर्माणवेत्ता से वंचित रहती है जो परमपिता परमात्मा सर्वज्ञ है और निर्माणवेत्ता है। परन्तु माता अपनम् ब्रह्मे जब उससे वंचित रहती है तो निर्माणवेत्ता, जब निर्माणवेत्ता ने इस मानव शरीर का निर्माण किया तो बेटा! बहत्तर करोड़ बहत्तर लाख दस हजार दो सौ दो नाड़ियों का निर्माण किया। मेरे प्यारे! देखो कहीं बुद्धि का निर्माण हो रहा है। बुद्धि भी मानो चतुष प्रकार की कहलाई जाती है जैसे बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञावी कहलाती है। मेरे पुत्रो! देखो इसी प्रकार हृदय भी दो प्रकार के हैं—एक अनुष्ठान और स्थली मानो देखो जो हृदय मानो जो शरीर के मध्य में है

एक लघु मस्तिष्क में हृदय कहलाता है जो मेरे प्यारे! देखो योगीजन उन हृदयों का अन्वेषण करते हैं। मुनिवरो! इस प्रकार का कहीं बुद्धि का निर्माण है तो कहीं मानो देखो चित्त के संस्कारों का निर्माण हो रहा है, कहीं अहंकार में इस शरीर को कटिबद्ध किया जा रहा है। तो निर्माण करने वाला कौन वह मेरा प्यारा प्रभु निर्माण कर रहा है और निर्माणवेत्ता ही मानो देखो अपना निर्माणशाला में अपने को अमृत कर रहा है। मेरे पुत्रो! जब महर्षि पिप्पलाद ने इस प्रकार अपना वर्णन किया अपनी देवी से। देवी ने कहा प्रभु आपम् ब्रह्मे कृतम्। उन्होंने कहा नहीं इसका निर्माण करने वाला प्रभु है और निर्माण कहाँ, माता के गर्भस्थल में होता है। माता के गर्भ में एक बिन्दु है और बिन्दु में शिशु है और जब शिशु जैसे ही प्रवेश होता है बिन्दु में तो मानों सर्वत्र देवता अपने-अपने क्रियाकलापों में तत्पर हो जाते हैं। माता के गर्भस्थल में निर्माण में सहयोगी—वह मानो देखो चन्द्रमा उसे अमृत देता है, सूर्य प्रकाश देता है और अग्नि तेजोमयी बनाती है, उष्णता देता है और मुनिवरो! देखो जल, जल उसके पांशे बन जाते हैं, जल ही उसका ओढ़न है, जल ही उसका बिछौना है और वह पांशे बन करके बेटा! माता के गर्भस्थल में निहित रहता है। मेरे पुत्रो! देखो अमृतम् ब्रह्मा असुति देवाः और वह पृथ्वी गुरुत्व देने वाली जिससे देखो पिण्ड का निर्माण होता है। मेरे पुत्रो! मेरा प्रभु कितना महान् विज्ञानवेत्ता है। मुनिवरो! देखो तरलत्व, तेजोमयी और गुरुत्व तीन प्रकार के परमाणु से इस संसार की रचना होती है, संसार यह भव्य भवन उपस्थित हो जाता है। इसी प्रकार माता के गर्भस्थल में मानव के शरीर का भी इसी प्रकार निर्माण होता रहता है। मेरे प्यारे! देखो अमृतम् ब्रह्मा निर्माण करने वाला प्रभु है। तो हे देवी माता के गर्भस्थल में मानो देखो एक बिन्दु है, बिन्दु में शिशु है और शिशु के होते ही वायु प्राण देता है, अन्तरिक्ष अवकाश देता है यह मानो देखो तारामण्डल बन करके लघु मस्तिष्कों का, रेणुकेतु मस्तिष्कों का निर्माण करते रहते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो वह प्रभु कितना महान् देवत्व कहलाता है। तो विचार आता रहता है माता अमृतम् ब्रह्मा देखो शकुन्तका ने कहा प्रभु अमृतम् ब्रह्मे। तो देव ने कहा, पिप्पलाद ने क्या देवी मेरे विचार में तो ऐसा आता है कि निर्माणवेत्ता वह प्रभु है माता के गर्भ में निर्माण होता है।

वीर और वीरांगना

मेरे पुत्रो! इतने में देवी ने उपस्थित हो करके कहा भगवन् जब यह माता का गर्भाश्य नहीं था तो यह परमाणुवाद कहाँ रहता था? उन्होंने कहा देवी? यह ही परमाणं ब्रह्मे हे देवी यह परमाणुवाद मानों देखो कुछ वीरत्व रूप में था, कुछ मानों देखो वीरांगना के रूप में विद्यमान था। वीरांगना जब देखो उन परमाणुओं की रक्षा करती है तो वह वीरांगना कहलाती है यह देवत्व को प्राप्त होती है और जब मानों मानव, पुरुष अपने में पालन करता है तो यह ब्रह्मचारी कहलाता है। ब्रह्मवर्चोसी बन जाता है। ब्रह्मवर्चसम् ब्रह्मलोकाम् वाचसुतम् देवत्वाम् ब्रह्मे वर्चसुताः वह वर्चोसी बन करके वह परमात्मा को अपने में धारण कर लेता है मानो देखो ब्रह्मचारी देवताओं की सभा में मानो देखो सुशोभनीय हो जाता है। अरे देवता कौन है जो ब्रह्म को अपने में चरी की भाँति अपने में रमण कर लेता है, अपने में धारण कर लेता है। वह बेटा! ब्रह्मवर्चोसी कहलाता है और ब्रह्म की चरी को वही तो चरने वाला है। तो विचार आता रहता है बेटा! पिप्पलाद ने कहा देवी वह मानो देखो ब्रह्मचारी है ब्रह्ममं ब्रहे व्रतम् देवाः ब्रह्मचारी ही मानो एक-एक श्वास को अपना मनका बना करके, ब्रह्म-सूत्र में पिरो करके मानो देखो ब्रह्मवर्चोसी बन जाता है। वह तपस्वी कहलाता है। **तप का अभिप्रायः इन्द्रियों को तपाना है** और इन्द्रियों को तपा करके मानव तपस्वी बनता है और वह ब्रह्मवर्चोसी को अपने में और ब्रह्म को अपने में स्वीकार करता हुआ अपने में धारयामि बन जाता है। मेरे पुत्रो! देखो जब ऋषि ने इस प्रकार अपना वर्णन किया तो देवी मौन हो गई और उन्होंने कहा देवी वही तो वीरांगना है इनकी रक्षा करने वाली परमाणुओं की जैसी चाक्राणी गार्गी जब भयँकर वनों में उद्गीत गाती रही। जब वेदमन्त्रों का जटा पाठ में गान गाया जाता है। हमारे यहाँ वेदमन्त्रों में नाना प्रकार की स्वर ध्वनि होती है जैसे जटा पाठ, माला पाठ, विसर्ग पाठ, उदात्त और अनुदात्त में देखो मानव गान गाता रहता है इसी प्रकार जब माता अपने में गान गाती थी तो सिंहराज और सर्पराज चरणों की वन्दना करते रहते थे। तो विचार आता रहता है बेटा! नाना ऋषिवर उनसे नाना प्रश्नों को करते रहे। तो विचार विनिमय क्या वह मेरी पुत्री वीरांगना बन जाती है जो उन परमाणुओं

की रक्षा करती है। इसी प्रकार इन्हीं परमाणुओं की रक्षा करने वाला वीरत्व की प्राप्त हो करके, ब्रह्मवर्चोसी बन करके ब्रह्म में अपने को स्वीकार करता है।

सात प्रकार का अन्न

मेरे प्यारे! देखो ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया तो माता चाक्राणं ब्रहे माता शकुन्तका ने कहा प्रभु मैंने चाक्राणी के सम्बन्ध में पूर्वकाल में भी बहुत कुछ श्रवण किया परन्तु मैं यह जानना चाहती हूँ भगवन् जब मानो यह वीर और वीरांगना नहीं होते यह परमाणुवाद कहाँ रहता है भगवन्! उन्होंने कहा हे देवी यह परमाणुवाद जब वीरांगना और वीरत्व नहीं होते तो यही परमाणुवाद देखो उस अन्न में विद्यमान होते हैं। परमपिता परमात्मा ने जब सृष्टि का सृजन किया, सृष्टि का प्रारम्भ किया, रचा तो उन्होंने, देव ने सात प्रकार के अन्न की उत्पत्ति की। उस परमपिता परमात्मा ने उस सात प्रकार के अन्न को रचा है।

दो प्रकार का अन्न

मेरे प्यारे! देखो एक अन्न वह है जो एक ही पौधा उसपे दो प्रकार का—एक मानव पान करता है, एक को पशुपान करता है। पशु पान करके बेटा! देखो दुग्ध देता है और मानव पान करता है तो मानव देखो ओज और तेज की उत्पत्ति करता है। एक अन्न को मेरी प्यारी माता भोजनालय में तपा रही है और गायत्राणी छन्दों का पठन-पाठन करती हुई और वह तेजोमयी बनाती है, अपने पुत्रो को तेजोमयी बनाती है मानो देखो वह अव्रतम् ब्रह्मा वह अन्न कहलाता है। एक ही पौधा है, एक पौधे पर दो प्रकार का अन्न है निचरले अन्न को गौ नाम का पशु पान करता है तो बेटा! दुग्ध दे रहा है। वाह रे! प्रभु तू कितना विज्ञानवेत्ता है। एक ही पौधा है उस पर दो प्रकार का अन्न है एक को देखो गऊ पान कर रही है, पशु पान कर रहा है वह दुग्ध दे रहा है, उससे ऊपर ले भाग को मानव पान कर रहा है तो ओज और तेज की उत्पत्ति कर रहा है। बेटा! यह सबका साझा अन्न है, अमृता कहलाता है। तो विचार-विनिमय यह कि अमृतम् ब्रह्मा तो तोय प्रव्हेः वही तो तेजोमयी कहलाता है इसको धारण करने के पश्चात्। मेरे प्यारे! दो प्रकार का अन्न एक ही पौधा—

एक पौधे में से अन्न को ले करके माता अन्न को भोजनालय में तपाती रहती है और कहती रहती है शुद्धम् भूतम् ब्रह्मा अन्नाः हे अन्न तू पवित्र है तू मेरी बुद्धि और मेरे मन को पवित्र बना जिससे क्योंकि मना उत्पन्नम् ब्रव्हा यह मन की जो उत्पत्ति है यह अन्न के द्वारा होती है। अन्न जितना पवित्र होता है उतना ही मन भी पवित्र होगा और मन जितना पवित्र होगा उतना मानो देखो यह हमारी प्राण क्रिया स्वच्छता में रमण करेगी। और जितनी प्राण क्रिया स्वच्छता में रहेगी उतने हमारे जीवन का जो नित्यप्रति क्रियाकलाप है वह पवित्र रहेगा। हम वेद के वाङ्मय में प्रवेश कर सकते हैं। तो मेरे पुत्रो! देखो ऋषि ने इस प्रकार अपना मन्तव्य दिया जब मन्तव्य दिया उन्होंने कहा एक पौधा है और एक पौधा मानो देखो उस पर दो प्रकार का अन्न है।

तीसरा अन्न—हुत

एक अन्न मानो देखो हुत कहलाता है। यजमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो करके वह हुत कर रहा है और कहता है प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा कह करके बेटा! देखो अग्नि के मुखारबिन्दु में मानो देखो देव को तृप्त करना चाहता है। हे यजमान जब तू याग करता है और याग में कहता है प्राणाय स्वाहा मैं अपने प्राण की आहुति दे रहा हूँ। प्राणों में दोष नहीं रहना चाहिए। अपानाय स्वाहा मैं अपान में पृथ्वी के विज्ञान को जानना चाहता हूँ। अमृतम् देखो वह व्यानाय स्वाहा मैं वितरण विज्ञान को जानना चाहता हूँ और वह कहता है समानाय स्वाहा मैं समानाय जो प्राण सम सर्वत्रता में विद्यमान है उस प्राण प्रतिष्ठा को अब मैं अपने में जानना चाहता हूँ। कहता है उदानाय स्वाहा उदान के द्वारा जो चित्त का मण्डल है मैं जन्म जन्मान्तरों के संस्कारों में निहित हो रहा हूँ मैं इन संस्कारों से विहिन होना चाहता हूँ। मैं मोक्ष को जाना चाहता हूँ। इस प्रकार जिज्ञासु यजमान कहता है प्राणाय स्वाहा अपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा कह करके देखो उदानाय की आहुति प्रदान करता है तो वह हुत कहलाता है। यह भी अन्न है जिससे मानव देखो हुत करता है, सुगन्ध देता है और देखो वह प्रदूषणता को समाप्त करता रहता है। परन्तु देखो वह हुत कर रहा है

हुताम् भूताम ब्रह्मणा लोकाम् अमृतम् ब्रह्मे देवत्वाम् लोकम् वसुतम ब्रह्मा मेरे प्यारे! देखो वह हुत कहलाता है जो देवताओं को प्रसन्न किया जाता है।

काला हिरण याग को ले गया

बेटा! मुझे एक समय वर्णन करते मुझे एक आख्यायिका स्मरण आती रहती है। मेरे प्यारे! देखो एक जिज्ञासु याग कर रहा था। याग को एक समय बेटा! काला हिरण ले गया और काले हिरण ने बेटा! वत्रासुर को प्रदान कर दिया और वत्रासुर ने बेटा! देखो वृष्टि कर दी और वृष्टि कर दी तो गऊ के बछड़े की बलि का वर्णन आया। तो मेरे प्याऱे! देखो इसमें ऋषि मुनि अपने में विचारने लगे बल देखो बैल के अमृतम् देखो गऊ के बछड़े ने पृथ्वी के मानो देखो चमड़ी को उध ोड़ करके अमृतम् देखो इसमें अन्न की स्थापना की। मेरे पुत्रो! देखो जब यह यज्ञ चला गया तो देवताओं ने प्रार्थना की और इन्द्र से कहा हे इन्द्र हमारे यहाँ से देवता अमृतम् दैत्यम् ब्रह्मा वत्रासुर हमारा यज्ञ ले गया है। तो उस समय मानो देखो इन्द्र के समीप शचि जाती है और शचि ने कहा हे देव देवता क्या पुकार कर रहे हैं? तुम मानो देखो देवताओं की वाणी को श्रवण करो। उन्होंने बेटा! देवताओं की वाणी को श्रवण किया। इन्द्र ने कहा बहुत प्रिय मैं इसको निकासने का प्रयास करूँगा। मेरे प्यारे! देखो उन्होंने गोतम ब्रहे वह वत्रासुर को अपने प्राण रूपी वज्र को ले करके बेटा! देखो हमारे **यहाँ वायु को यहाँ इन्द्र कहा गया है** इन्द्र ने वायु रूपी वज्र को ले करके **वत्रासुर कहते हैं मेघमण्डलों को** उन्हें छिन्न-भिन्न कर दिया और वृष्टि हो गई और वृष्टि हो करके ही मानो देखो गऊ के बछड़ों ने अमृतम् देखो वह पृथ्वी की चमड़ी को उधेड़ करके उसमें बीज की स्थापना कर देई। तो मेरे पुत्रो! देखो हिरण्यम् ब्रह्मा यह हिरण नाम यागांम् भूतम् ब्रहे धुएं का नाम हिरण है जो याग को ले जाता है और याग कहते हैं जो यागाम् जितना भी सुविचार है, शुक्रिया है, स्वाहा है वह सर्वत्र मानो देखो प्रजा की सु भावना है। तो आज मैं बेटा! इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नहीं केवल मैं अलंकारों की चर्चा प्रगट करने नहीं आया हूँ। यह मानो देखो अलंकार हैं मैं अलंकारों में जाना नहीं चाहता हूँ। विचार विनिमय केवल यह कि मुनिवरों! देखो

कि हिरण्यम् ब्रहे यह हुत कहलाता है जो कहता है हुतम् ब्रह्मा देखो प्राणाय स्वाहा आसुतम ब्रह्मे लोकाम् स्वाहा प्रजापतये स्वाहा कह करके यजमान अपने याग को मानो देवताओं को प्रसन्न करता है। तो उसे मानो देखो अन्न एक हुत जिससे देवता प्रसन्न होते हैं, प्रदूषण समाप्त होता है वायु मण्डल जिससे पवित्र बन जाता है।

चौथा अन्न—प्रहुत—पुरोहित

मेरे प्यारे! चौथा जो अन्न है उसको प्रुहुत कहते हैं। हमारे यहाँ प्रहुत कहते हैं पुरोहितों को! जो पुरोहित मुनिवरो! देखो राष्ट्र को ऊँचा बनाता है, समाज को ऊँचा बनाता है। बेटा! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब पुरोहितों की चर्चा आती है तो पुरोहित कहते हैं जो राष्ट्र और समाज को कल्याण के मार्ग पर ले जाते हैं। मेरे प्यारे! देखो जिस समय अमृतम् देखो राजम् ब्रहे जब मुनिवरो! अयोध्या में दशरथ का राज तप रहा था तो उस समय मुनिवरो! देखो महर्षि वशिष्ठ और विश्वामित्र दोनों एक समय अपनी स्थली पर विद्यमान थे। मेरे प्यारे! वशिष्ठ ने कहा था हे अमृतम्, हे विश्वामित्र तुम याग करो। तुम मानो देखो एक धनुर्याग करो तो देखो उन्होंने एक धनुर्याग किया दण्डक वनों में। मेरे प्यारे! मुझे वह याग स्मरण आता रहता है। मैं जब उस याग की चर्चा करता रहता हूँ तो मेरा अन्तर्हृदय गदगद हो जाता है। उनके यहाँ बेटा! नाना ब्रह्मचारी अध्ययन करते थे और उनके यहाँ रारम ब्रहे जब अध्ययन करते थे तो याग को सफल करने के लिए मेरे प्यारे! देखो महर्षि विश्वामित्र गमन करते हैं ओर गमन करते वह जो अयोध्या में पधारे। तो अयोध्या में पधारने के पश्चात् राजा ने दृष्टिपात किया कि ऋषि का आगमन हो रहा है। तो बेटा! राजस्थली को त्याग दिया और राजा ने कहा आईये भगवन् विराजिये। वह विराजमान हो गये। उन्होंने कहा कहो भगवन् आज बिना सूचना के तुम्हारे आने का कारण क्या है? तो महर्षि विश्वामित्र बोले कि मैं एक याग कर रहा हूँ दण्डक वनों में और मेरे याग को सफल करने के लिए मुझे राजकुमार चाहिए। उन्होंने कहा भगवन् अमृतम् यह बाल्य तो किशोर हैं, मैं आपके याग को सफल करूँगा। विश्वामित्र ने कहा नहीं मुझे स्वयँ अपने में सफल करना है। ब्रह्मणे व्रतम मुझे राजकुमारों की

आवश्यकता है। मेरे प्यारे! देखो यह वार्ता, यह सूचना राष्ट्र गृह में पहुँची जहाँ देखो कौशल्या और सुमित्रा और देखो कैकई अमृतम् मानो देखो इन्हें यह प्रतीत है यह बारी-बारी अपने में न्यायालय में न्याय करते थे। अपने देखो अयोध्या का एक नियम था त्रेता के काल में जैसे पुरुषों के न्यायालय में पुरुष न्याय करता है इसी प्रकार देवियों का न्याय करने के लिए देवियों का मानो देखो न्यायालय था। अयोध्या का एक नियम था भगवान् मनु के काल से ही देखो देवियों का न्याय देवियाँ करें और पुरुषों का न्याय पुरुष राजा करे। मेरे प्यारे! राज पुरुष का न्याय होना चाहिए। जिस प्रकार अपने-अपने न्यायालय में से वह देवियों ने देखो बारी-बारी ऋषि के चरणों को स्पर्श किया और वह विराजमान हो गये और उन्होंने कहा क्या चाहते हैं ऋषि वर? तो उस समय राजा ने कहा कि राजकुमारों को चाहते हैं, वह धनुर्याग कर रहे हैं। उन्होंने कहा बहुत प्रिय। मेरे प्यारे! माता कौशल्या ने कहा था उस समय हे राजन् यदि हमारे गर्भ से उत्पन्न होने वाले पुत्र यदि एक ऋषि की सेवा नहीं कर सकते और उसके याग को सफल नहीं कर सकते तो हमारा गर्भाश्य दूषित हो जाएगा। मेरे प्यारे! देखो माता कौशल्या ने जब ऐसा कहा तो राजा नम हो गये और नमः होने के पश्चात् उन्होंने कहा जाओ राजकुमारों को प्रदान करो। मेरे प्यारे! देखो उन्होंने चारो राजकुमारों को महर्षि विश्वामित्र के सहित जाओ तुम देखो याग को सफल करो।

मेरे प्यारे! देखो महर्षि विश्वामित्र चारों पुत्रो को ले करके उन्होंने धनुर्याग में जिसमें दो सौ ब्रह्मचारी अध्ययन करते थे। उन्होंने बेटा! देखो अस्त्रो शस्त्रो की विद्या प्रदान की, वह धनुर्याग कहलाता है। तो वह कौन करता है वह पुरोहित है। तो बेटा! देखो राज पुरोहित जो होते हैं वह पुरोहित उसे कहते हैं जो पराविद्या को देने वाला हो। पराविद्या को मानो देखो राष्ट्र और समाज के लिए और जन समाज के लिए मानो देखो जो क्रियाकलापों में आ सके उसका नाम धनुर्याग कहलाता है। वह मानो देखो इस प्रकार के धनुर्याग को करने लगे। तो बेटा! आज मैं विशेष नहीं केवल यह क्या मुनिवरो! देखो वह पुरोहित हैं। यह प्रुहुत भी अन्न कहलाता है।

साझा अन्न

यह चार प्रकार का जो अन्न है—ये जो एक पौधे पर दो प्रकार का अन्न है और एक अन्न को मानो देखो देवताजन जो हुत करने वाले हैं, यजमान करता है और मानो तीसरा चतुर्थ जो अन्न है देखो प्रुहुत कहलाता है। यह चार प्रकार का अन्न सबका साझा अन्न कहलाता है जिससे बेटा! मानव का कल्याण होता है।

आत्मा का अन्न

तीन प्रकार का जो अन्न है बेटा! वह आत्मा का अन्न है। वह देखो मन, कर्म और विचार को ले करके जो मुनिवरो! देखो मानव याग करता है उसका साकल्य बना करके अन्तरात्मा में जो आहुति देता है बेटा! उससे आत्मा बलवान् होता है वह आत्मीय यज्ञ क्या जिसको यौगिकवाद, यौगिकवाद में यौगिक याग कहा जाता है। तो विचार आता रहता है बेटा! देखो ऋषि ने अमृतम् ब्रह्मा वर्णनम् ब्रहे देवाम् ब्राहा महर्षि पिप्पलाद मुनि बोले देवी मन, कर्म और विचार इनके द्वारा जो इनका साकल्य बना करके ऋषि-मुनि देखो हृदय रूपी यज्ञशाला में जो याग करता है इनका साकल्य बना करके वह आत्मा मानो उस परमपिता परमात्मा को प्राप्त हो जाता है।

मेरे प्यार! देखो यह हुतम ब्रह्मा कृतम् यह सात प्रकार का अन्न है जो परमपिता परमात्मा ने सृष्टि के प्रारम्भ में उत्पन्न किया था। चार प्रकार का अन्न मानो यह देखो सबका साझा अन्न है और तीन प्रकार का अन्न है जिसमें आत्मा बलवान् होता है, आत्मा में बलिष्ठता आती है। उस आत्मा को जानने वाला ही मुनिवरो! आत्मतत्त्ववेत्ता बनता है। आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नहीं आया, मैं व्याख्याता नहीं हूँ मैं केवल तुम्हें परिचय देने के लिए आया हूँ और वह परिचय यह कि सृष्टि के पिता ने जब संसार की रचना की तो बेटा! सात प्रकार के अन्न को उत्पन्न किया। एक पौधे पर दो प्रकार का अन्न है—एक पशु का अन्न है तो एक मानव का अन्न है, एक प्रहुत अन्न है जिससे देवता प्रसन्न किए जाते हैं। जो अग्नि के मुखारबिन्दु में आहुति देने वाला मानो यजमान अपने साकल्य की आहुति देता है जो देवताओं को प्राप्त हो

करके वृष्टि—वह प्रसन्न हो करके वृष्टि करते हैं और वृष्टि के द्वारा यह पृथ्वी को नाना प्रकार के व्यञ्जनों वाली बन जाती है। इसी प्रकार एक अन्न जो पुरोहित मानो देखो पुरोहितजन जो राष्ट्र और समाज का कल्याण करने वाले हैं। तो मेरे प्यारे! देखो मन, कर्म और विचार यह तीन प्रकार का अन्न है बेटा! जो मन है, कर्म है जो मन से कर्म किया जाता है और विचार है परन्तु देखो उनका साकल्य बना करके जो हृदय रूपी यज्ञशाला में बेटा! याग करता है वह योगी कहलाता है। वह योगेश्वर बन जाता है। तो यह सात प्रकार का **अन्न—अन्न का अभिप्रायः यह है कि जिससे तृप्त होता है उसी का नाम अन्न है।** जैसे मानो क्षुधा लग रही है मोटा अन्न ग्रहण करने से बेटा! देखो भोजनालय में शरीर को तृप्त किया जाता है और मुनिवरो! देखो वह वाणी के द्वारा जो उपदेश देता है उससे मानव का आन्तरिक जगत पवित्र होता है। मेरे प्यारे! इसी प्रकार आहुति देने वाला कर्म मानो देखो वायु मण्डल को पवित्र बनाता है और देखो मन, कर्म वचन, विचार को ले करके जो याग करता है वह यौगिक याग कहलाता है जिससे देखो बेटा! आत्मा बलिष्ठ होता है और हृदय रूपी यज्ञशाला में वह याग करता है। तो मेरे प्यारे! देखो आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट नहीं कर रहा हूँ विचार विनिमय केवल यह कि सृष्टि के पिता ने यह सात प्रकार के अन्न को उत्पन्न किया।

अव्ययों में निहित रहता है

मेरे पुत्रो! देखो ऋषि इतना वाक् उच्चारण करके जब मौन होने लगे तो देवी ने कहा, शकुन्तका ने प्रभु मैं जानना चाहती हूँ जब यह सात प्रकार को अन्न नहीं था तो यह परमाणुवाद कहाँ रहता था? तो मेरे प्यारे! देखो देवी के वाक्यों को पान करके ऋषि पिप्पलाद ने कहा हे देवी देखो जब यह अन्ननम् ब्रह्मा वर्णस्सुतम मानो देखो जब अन्नाद वृति देवाः जब यह अन्ननम् अन्न भी नहीं था तो यह परमाणुवाद मानो अपने-अपने अव्ययों में निहित रहते हैं। जब यह आत्मा शरीर को त्याग देता है देवी तो मानो देखो अग्नि के परमाणु अग्नि में प्रवेश हो जाते हैं, जल, जल में प्रवेश हो जाता है और पृथ्वी गुरुत्व में प्रवेश हो जाती है, पृथ्वी में रत्त हो जाते हैं और प्राण वायु में चला गया और मानो देखो अवकाश

अन्तरिक्ष में चला गया। हे देवी यह आत्मा अपने संस्कारों को ले करके, मानो चित्त के मण्डल को ले करके यह मानो देखो वायु मण्डल में प्रवेश हो जाता है। तो देवी मैं जानना यह चाहता रहता हूँ, तुम जो कहती हो कि मेरा पुत्र मृत्यु को प्राप्त हो गया है, तो देवी मैं जानना चाहता हूँ कि मृत्यु है क्या? क्योंकि न तो परमाणुवाद की मृत्यु होती है, न आत्मा की मृत्यु होती है कर्मबन्धन की डोरी को ले करके जब यह आत्मा गमन करता है, शरीर को त्याग देता है यह सूक्ष्म शरीर में चला जाता है। यह मानो पाँच प्रकार की वायु में भ्रमण करता हुआ यह आत्मा मानो जैसे संस्कार अन्तिम में होते हैं उसी के आधार पर किसी माता के गर्भ में प्रवेश कर गया है। क्योंकि चित्त का मण्डल इसके साथ रहता है और मानम् ब्रह्मे व्रतम् आत्माम् भूतम् ब्रह्मे जब यह आत्मा मानो देखो चित्त के सूक्ष्म शरीर में प्रवेश और जब सूक्ष्म शरीर से उपराम होता है तो कारण शरीर में चला जाता है। आज मैं बेटा! विशेषता में नहीं जा रहा हूँ केवल विचार विनिमय यह कि अमृतम् ब्रह्मा लोकाम् मानो देखो अमृत है, वह आत्मा शाश्वत है। आत्मा किसी काल में विनाश को प्राप्त नहीं होता, न परमाणुवाद का ही विनाश होता है परन्तु एक संकल्प मात्र वही एक संकल्प विकृत होता रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो माता शकुन्तका बड़ी प्रसन्न हुई और अपने ऋषि के चरणों को स्पर्श किया और उन्होंने कहा धन्य हे प्रभु आपने मुझे मृत्यु से पार कर दिया है। प्रभु मानम् ब्रह्मे देवत्वाम् ब्रह्मे।

मृत्यु की मृत्यु

उन्होंने कहा देवी मृत्यु भी है आगे तुम प्रश्न नहीं कर रही हो। मेरे प्यारे! शकुन्तका ने कहा प्रभु वह कैसे? क्या है देवी एक समय राजा जनक की सभा में जब अर्द्धभाग विद्यमान थे तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से यह प्रश्न किया अर्द्धभाग ने भगवन् मृत्यु की मृत्यु क्या है? तो उस समय पिप्पलाद ब्रहे देखो अर्द्धभाग के वाक्यों को पान करने वाले देखो महर्षि याज्ञवल्क्य ने कहा था क्या हे ऋषि मत कहो मृत्यु की मृत्यु नहीं होती, मृत्यु की मृत्यु ब्रह्म है क्योंकि ब्रह्म के जानने वाले की मृत्यु नहीं हुआ करती। तो मेरे प्यारे! देखो यहाँ आकर के ऋषि अपने में मौन हो गया और उसने कहा देवी जो ब्रह्म को जानने वाला है उसकी मृत्यु नहीं

होती और अज्ञान का नाम मृत्यु है, प्रकाश का नाम जीवन है। मानो देखो आत्मा को जानने वाला शाश्वत कहलाता है। तो मेरे पुत्रो! देखो जब ऋषि ने इस प्रकार अपना मन्तव्य दिया, अपनी वार्ता प्रगट की तो वह ऋषि अपने में मौन हो गया और देवी ने चरणों को स्पर्श किया उन्होंने कहा धन्य, हे प्रभु आप ने मेरे अज्ञान को दूरी किया है मैं मृत्युम् ब्रह्मा मैं मृत्यु को जान गई हूँ।

बेटा! देखो विचार आता रहता है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गा करके बेटा! इस सागर से पार होने का प्रयास करें। **मानव का कर्त्तव्य है कि अपने में अपनेपन में ही समाहित हो जाए और अपनी आभा में परणित होता हुआ सागर से पार हो जाए।** यह संसार रूपी सागर है जिसको हमें जानना है। तो यह है बेटा! आज का वाक्। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय यह क्या मुनिवरो! देखो यहाँ मृत्यु को जानना चाहिए यह मृत्यु क्या है। **अज्ञान का नाम मृत्यु है, प्रकाश का नाम जीवन है।** जब ज्ञानी बन जाता है तो प्रकाश हो जाता है, अज्ञान आ जाता है तो अन्धकार आ जाता है। तो यह है बेटा! आज का वाक्।

आज के वाक् उच्चारण करने का हमारा अभिप्रायः क्या महर्षि पिप्पलाद उनकी पत्नी दोनों का सम्वाद और महात्मा जमदग्नि को यह निर्णय हो गया था क्या वास्तव में मृत्यु का अभाव है सर्वस्व ऋषि जानते हैं। तो मेरे प्यारे! यह अनुपम है इस जगत् को जानना और जगत् में मानो प्रभु की प्रतिभा में परणित होना यही हमारा वाक् है। इस वाक् को ले करके जब हम आगे रमण करते हैं तो हमारा जीवन पवित्र बनता है। यह है बेटा! आज का वाक्। अब मुझे समय मिलेगा तो शेष चर्चाएँ में कल प्रगट करूँगा। आज का वाक् समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन।

ओ३म् देवा आभ्याम्! रथा माम प्रजाम् रथम् आप्याम्

दिनांक : 1 जुलाई, 1992
स्थान : श्रीमति रामवती धर्मपत्नि श्री महावीर, ग्राम चमरावल, मेरठ

।। ओ३म् ।।

ऋषियों के उद्गार

1. परमात्मा को जिन रूपों से पुकारा जाता है उन्हीं रूपों से प्रगट हो रहा है।
2. सँसार के जितने भी महान कार्य हैं वे सब मन की सँकल्प शक्ति के द्वारा ही होते हैं।
3. गृह प्रवेश तो उसी समय हो जाता है जब सँकल्प बन जाता है।
4. सँस्कारों का आदान प्रदान करना सँस्कारों को बनाना, सँस्कारों का निर्माण करना उसी का नाम हमारे यहाँ गृहप्रवेश कहा जाता है।
5. गृह में पति-पत्नी अग्नि को प्रदीप्त करते हैं, अग्नि मानव का विचार है।
6. आदि ऋषियों ने कहा है यजमान का सौभाग्य है कि वह अपने गृह में याग कर रहा है।
7. यजमान और जितने भी होताजन होते हैं, उनके द्वारा प्रसन्नता हो, प्रसन्नता से जो देव-पूजा करते हैं वे मृत्यु से दूर होने का प्रयास करते हैं।
8. जब हम यज्ञशाला में विराजमान हों, याग के समीप विराजमान हों तो हमारा चित्त प्रसन्नता को प्राप्त होना चाहिए हमारा चित्त प्रसन्न हमारे चित्त में एक आनन्द हो।
9. यज्ञशाला के समीप वह प्राणी आना चाहिए जिसका चित्त प्रसन्न हो।
10. देवता कौन बनता है? जो अपनी प्रवृतियों को उर्ध्व गति में ले जाता है। उर्ध्व गति में ले जाने वाला देवता कहलाया जाता है।
11. उसका (मानव) का विश्वास ही उसको चिंतित बनाता रहता है।
12. यदि मानव भय के सँकल्प को त्याग देता है तो कुछ भी भयदायक दृश्य उपस्थित नहीं हो पाता।
13. मानव तो प्रयत्न कर सकता है वह भी सीमित, असीमित नहीं। परमात्मा इतना अनन्त है वह सभी कुछ समय के अनुकूल करा देता है।
14. जैसा मानव का समय होता है उसी के अनुकूल वातावरण बन जाता है।
15. आज तक भी असँख्य सूर्यों का प्रकाश इस पृथ्वी तक नहीं पहुँच सका।

दान

वैदिक अनुसन्धान समिति के प्रकाशन के कार्य के लिए निम्न याज्ञिक एवम् श्रद्धालु महानुभावों ने अपना सात्त्विक सहयोग प्रदान किया है :-

श्री धर्मवीर, पापड़ा काकड़ा	50
श्री मास्टर शिवराज एवं दुष्यंत, दिनकरपुर	200
श्री प्रवीन, बड़ौत	50
श्री विजयपाल सिंह त्यागी, शिव शक्ति विहार, गढ़ रोड, मेरठ	201
श्री पवन कुमार सिरोही, सर्वोदय कालोनी, हापुड़	1000
श्री वीरेन्द्र सिंह, काकड़ा, मुजफ्फरनगर	200
श्री बाबू राम, मीरपुर	51
श्री हरि शंकर भारद्वाज, मोदी नगर, गाजियाबाद	101
श्री कमल सिंह	101
श्री जोगिन्दर, भुवाना	100
श्री चन्द्रू, कासिमपुर	51
श्री गुप्त दान	21
श्री हरद्वारी लाल कश्यप, कासिमपुर, खेरी बागपत	501
श्री प्रताप सिंह, फफुन्डा, मेरठ	200
श्री सुधा त्यागी, मेरठ	500
कु. आस्था त्यागी सुपुत्री श्री कपिल त्यागी साहिबाबाद, उ.प्र.	1000
श्री कृष्ण लाल बत्रा, इंद्री, जिला करनाल	101
श्री राज पाल सिंह भमोरी	100
श्री ब्रिजेश, मुल्सम	100
श्री होशियार सिंह, मुल्सम	100
श्री हरिमोहन त्यागी पुत्र श्री रामेश्वर दयाल दिनकरपुर	100
श्री नीरज कुमार और श्री हिमांशु कुमार पुत्र श्री अरविन्द कुमार, 153/142, शिवनगर, मोदी नगर, मेरठ	501
श्रीमती रेनू तुली, के-3, लाजपत नगर III, नई दिल्ली	2100
श्री जगन्नाथ, अतराड़ा, मेरठ	100
श्री सुरिन्दर सिंह, मखनपुर	500
श्री सीता राम, शास्त्री नगर, श्यामली	100
श्री शैलेन्द्र मलिक, भदोड़ा, मेरठ	100
श्री प्रियम त्यागी, मच्छरा, मेरठ	501
श्री सोदन शास्त्री, मेरठ	100
श्री सुशील त्यागी, मेरठ	100
श्रीमती ऊषा देवी और श्रीमती पूनम त्यागी बरखन्डा, हापुड़	500

मास्टर नितिन मलिक, भदोड़ा, मेरठ	30
डा. शिव कुमार, शाहपुर मुजफ्फरनगर	100
डा. वीरसेन, काकड़ा, मुजफ्फरनगर	50
श्री पुनर्वासु भारद्वाज पौत्र डा. ओम प्रकाश शर्मा और प्रकाशवती शर्मा, ननौता सहारनपुर	501
श्रीमति प्रकाशो त्यागी, मुजफ्फर नगर	500
श्रीमती शान्ती देवी अवरोल, के-3, लाजपत नगर III, नई दिल्ली	1100
श्रीमती विशाखा, सहाना	200
श्रीमती संतोष त्यागी पत्नी श्री चन्द्रपाल वेद्य जी मोहन नगर	100
सामू मास्टर जी, काकड़ा	51
श्री हरपाल सिंह (बैंक वाले), ग्राम, आजपुर मुल्सम	101
श्रीमती ऋचा त्यागी पत्नी श्री आलोक त्यागी, वसुन्धरा	500
श्री रनवीर सिंह पुत्र इलम सिंह, खेड़ी गढ़ी,	50
श्री कमाल सिंह पुत्र मानराज, मोदी नगर,	101
श्री शीष पाल सिंह पुत्र रामस्वरूप सिंह सोलदा, मच्छरा	101
श्री बलवीर सिंह मुखिया, खेड़ी गंज, बुढाना	101
श्री ईश्वर सिंह, ग्राम-मुहम्मदपुर, राजसिंह, बुढाना	101
श्री रामानन्द त्यागी, संजय नगर, गाजियाबाद	251
डा. राजेन्द्र त्यागी, ग्राम-रहदरा, मेरठ	101
श्री विजय सिंह, कैथवाड़ी, जिला मेरठ	101
श्री शिव ओम त्यागी, मुजफ्फरनगर	501
श्री देवव्रत ब्रह्मचारी (बलवीर त्यागी) ग्राम बरनावा	100
श्री कमलेश त्यागी, मुजफ्फर नगर	101
श्रीमति चन्द्रकली, ग्राम करनावल, जिला मेरठ	101
श्री हरिधर सिंह, कैथवाड़ी, गायत्री	101
श्री यादराम, भमौरी	100
श्री अंगीरथ मुनि, 9/283, शास्त्रीगढ़ी, बड़ौत	201
श्री ब्रह्मपाल सिंह जी, ग्राम-मुल्सम	101
श्री जयपाल पुत्र इलाम सिंह, ग्राम-मुल्सम	100
श्री जगपाल सिंह, ग्राम-मुल्सम	100
श्री राज सिंह, ग्राम हर्रा	51
श्री वीरेन्द्र सैनी, काकड़ा	151
श्री किशनपाल सिंह, ग्राम-मुल्सम	101
श्री सीताराम अलुम, शास्त्री नगर	100
श्री देवेन्द्र शास्त्री, गुरुकुल बरनावा	251
श्रीमती दिव्या त्यागी, दिनकरपुर	100

श्री मूल चन्द, आई.आई.टी., दिल्ली	500
श्री देवसरन त्यागी, दिनकरपुर	100
श्री नाहर सिंह, अख्तयारपुर	101
मास्टर ऋविक त्यागी, मकनपुर, गाजियाबाद	500
श्री राजपाल वानप्रस्थी, भमौरी	100
श्री दुष्यंत त्यागी और विपिन, वसुन्धरा, गाजियाबाद	501
श्री हर्षदीप त्यागी, बरला	101
श्री प्रमोद और श्रीमती उषा त्यागी, बुराड़ी, दिल्ली	500
श्रीमति भागवती देवी, ग्राम रसना	101
श्री जयवीर आर्या, ग्राम-भमौरी, मेरठ	50
श्री जयभगवान आर्य, ग्राम-भमौरी, मेरठ	50
श्री उमेश कुमार आर्य, ग्राम-भमौरी, मेरठ	50
श्री ब्रिजेश, मुस्लम, बागपत	100
श्री महावीर प्रसाद जी ब्रिजेश त्यागी, नारंगपुर	102
श्री सौरभ शास्त्री, सिमथला (अमरोहा)	101
श्रीमती प्रकाशवती त्यागी व सूर्यदेव त्यागी दिनकरपुर, मुजफ्फरनगर	500
श्रीमती कमलेश, हरी इन्क्लेव, 157, बुलन्दशहर	500
कु. साक्षी बक्शी पुत्री सरोज बाला बक्शी, कंकड़खेड़ा, मेरठ	201
श्री सागर त्यागी पुत्र धुरेन्द्र दन्त त्यागी, सरसौहेड़ी, सहारनपुर	201

सूचना

सभी आजीवन/वार्षिक सदस्यों को 'यौगिक प्रवचन' पत्रिका प्रत्येक मास की 10/11 तारीख को प्रेषित की जाती है। किसी भी सदस्य को पत्रिका प्राप्त न होने की स्थिति में अपने पोस्ट मैन से एक सप्ताह के समय में जानकारी करें और फिर भी न मिलने की स्थिति में अपने सम्बन्धित पोस्ट आफिस में इस विषय में लिखित एक प्रार्थना-पत्र पोस्ट मास्टर साहब को दें जिससे कि पत्रिका न मिलने की खोज-बीन डाक विभाग द्वारा कराके आपकी पत्रिका आपको समय पर मिलनी प्रारम्भ हो जावे। कृपया प्रार्थना-पत्र की एक प्रति पर डाक विभाग द्वारा प्राप्ति के हस्ताक्षर व मोहर लगवाकर हमें भी भेज देवें जिससे कि इस विषय में यहाँ भी डाक विभाग को अवगत कर दिया जावे।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

*1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	80.00	34.	यागमयी-सृष्टि	35.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	80.00	35.	याग-चयन	40.00
3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	60.00	36.	दिव्य-रामकथा	120.00
4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	60.00	37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	35.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	60.00	38.	दिव्य-ज्ञान	40.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	80.00	*39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	90.00
			40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	40.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	25.00	41.	आत्म-उत्थान	40.00
			42.	तप का महत्व	40.00
8.	आत्म-लोक	35.00	43.	अध्यात्मवाद	40.00
9.	धर्म का मर्म	40.00	44.	ब्रह्मविज्ञान	40.00
10.	शँका-निवारण	30.00	45.	वैदिक-प्रभा	35.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्व	40.00	46.	प्रकाश की ओर	35.00
			47.	कर्तव्य में राष्ट्र	40.00
12.	आत्मा व योग-साधना	35.00	48.	वैदिक-विज्ञान	35.00
*13.	देवपूजा	50.00	49.	धर्म से जीवन	35.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	125.00	50.	आत्मा का भोजन	40.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	125.00	51.	साधना	35.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	125.00	52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	40.00
17.	रामायण के रहस्य	35.00	53.	यज्ञोमयी-विष्णु	40.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	40.00	54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	80.00
19.	महाभारत के रहस्य	30.00	55.	स्वर्ग का मार्ग	40.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	35.00	*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	80.00
21.	रावण-इतिहास	50.00	57.	माता मदालसा	50.00
22.	महाराजा-रघु का याग	30.00	*58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	80.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	35.00	59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	80.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	35.00	60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	80.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	35.00	61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	80.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	35.00	62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	80.00
27.	पंच-महायज्ञ	35.00	*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	80.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	40.00	64.	मानव कल्याण की चर्चाएं	50.00
29.	याग-मन्जूषा	40.00	65.	प्रभु-दर्शन	50.00
30.	आत्म-दर्शन	30.00	*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	80.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	30.00	67.	समाज उत्थान का मार्ग	50.00
32.	याग और तपस्या	60.00	*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	80.00
33.	यागमयी-साधना	35.00	*69.	ब्रह्म की ओर	50.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

उपरोक्त मूल्य 1 नवम्बर, 2015 से लागू है।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध हैः-

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला-बागपत, (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 01234-240395
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)। मो. नं. : 09412888050
3. सुश्री नीरू अबरोल, के-3, लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294
4. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, A-59 पंचशील एन्क्लेव, नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
5. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
6. श्री अनिल त्यागी, सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4165802
7. श्री आशीष त्यागी, डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-2642052
8. श्री लोमश त्यागी, 106/4, पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
9. श्री विवेक त्यागी, 16ए, अशोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड, (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0122-2316196
10. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मो. नं. 09910589486
11. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110-मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मो. नं. 09899228860, 09871367937
12. श्रीमती बाला, 251, दिल्ली गेट, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23282088
13. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे.पी. नगर (उ.प्र.) मो. नं. 09412139333
14. श्री सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सैक्टर बीटा-2, ग्रेटर नोएडा, (उ.प्र.) मो. नं. 09313530505
15. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
16. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

मासिक सहयोग

श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	**1000 रुपये**
श्री चिंतामणि त्यागी एवं श्री जगमोहन त्यागी बरला, मुजफ्फरनगर	**1000 रुपये**
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	**1000 रुपये**
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	**500 रुपये**
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	**500 रुपये**
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	**251 रुपये**
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	**251 रुपये**
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव, आणद, गुजरात	**250 रुपये**
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	**250 रुपये**
श्री कृष्ण लाल बत्रा, इन्द्री, जिला करनाल	**201 रुपये**
श्री गुलजार सिंह, जगत पुरी, कृष्णा नगर, दिल्ली	**100 रुपये**
श्रीमती वीना त्यागी, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश	**100 रुपये**
मास्टर कवन्धि, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	**101 रुपये**
मास्टर सिद्धार्थ, अँकुर अपार्टमैन्ट, दिल्ली	**101 रुपये**

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेद मन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से प्रस्तुत है :-

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)
पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली
बैंक खाता नं.–0149000100229389, IFSC Code –PUNB–0014900

Website : www.shringirishi.in
Email : contact@shringirishi.in

उद्‌बोधन

हे मानव! जब तक तू अपने को नहीं जानेगा और जब तक अपने महत्त्व और मानवता को भली प्रकार नहीं समझेगा तब तक तू मानवता की कोई जानकारी नहीं कर सकता, क्योंकि मानव जीवन मनोहर होता है। और मनोहर जीवन बनाने के लिए मानव को सुन्दर योजना बनाने की आवश्यकता है और जो मानव सुन्दर योजना नहीं बनाता उसका जीवन व्यर्थ हो जाता है। इसीलिए मानव को अपने धर्म पर दृढ़ रहना चाहिए और मर्यादा में चलना चाहिए। आपत्ति आने पर भी उसे सहना चाहिए, सहन करते रहे तो उसके उज्ज्वल होने का समय अवश्य आ जायेगा। आज मानव स्वार्थ के वशीभूत हो दूसरों की निन्दा में लगा रहता है। दूसरों की त्रुटियों को ग्रहण करता है। अरे मानव! आज तू दूसरों की त्रुटियों को ग्रहण क्यों कर रहा है? अरे! इनकी अच्छाईयों को ग्रहण कर, तुम्हारे द्वारा अच्छाईयों का ढेर लग जायेगा। तुम अच्छाईयों के पुतले बन जाओगे।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 44 : अंक : 518
नवम्बर 2015

मूल्य :
दस रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R. No. DL (S)-01/3220/2015-17
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2015-2017
POSTED AT N.D.PS.O ON 10/11-11-2015
Published on 5th day of the same month